सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, अगस्त 2020 वर्ष 19 अंक 5,6

तमन्ना नबी ने शहादत की की

शहीदों की दुन्या बड़ी है अ़जीब
वह जन्नत में रहते नहीं हैं ग़रीब
परिन्दों की शक्लें मिली हैं उन्हें
जहाँ चाहें जन्नत में खायें पियें
नहीं उनको रंज और नहीं उनको ग़म
मुकम्मल है राहत नहीं है अ़लम
वह ज़िन्दा हैं उनको न मुर्दा कहो
वह मुर्दा नहीं उनको ज़िन्दा कहो
शहादत की दौलत बहुत है बड़ी
तमन्ना नबी ने शहादत की की
नबी पर पढ़ें हम दुरूदो सलाम
रहे उनपे रहमत खुदा की मुदाम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
मुह़र्रमुल ह़राम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
खिलाफते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	14
ईदुल अज़्हा (बक़र ईद)	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	16
हज़रत ख़लीलुलाह अलै0 (पद्य)	इदारा	20
कुर्बानी (बलिदान)	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0	21
स्वतंत्रता दिवस	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	24
मुआ़शरती बुराईयाँ और	हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	28
पारिवारिक व्यवस्था टूटने	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	31
बड़ों का अदब	मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	36
स्वतंत्रता दिवस (पद्य)	इदारा	38
मधुमक्खियों के शरीर की रचना	अबरार अहमद	39
अपील अहले खैर हज़रात	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

वे दोनों बोल उठे ऐ हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर(बड़ा) अत्याचार किया और अगर तूने हमें माफ न कर दिया और हम पर कृपा न की तो निश्चित ही हम बड़े घाटे में आ जाएंगे[1](23) कहा उतर जाओ[2] तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक अवधि तक के लिए तुम्हें उससे फायदा उठाना है(24) कहा उसी में तुम जियोगे और उसी में मरोगे और उसी से उठाए जाओगे(25) ऐ आदम की संतान! हमने तुम्हारे लिए लिबास उतारा कि वह तुम्हारी शर्म की जगहों को छिपाए और शोभा का साधन भी हो और तकवा का लिबास उससे बढ़ कर है, यह अल्लाह की निशानियाँ हैं शायद वे ध्यान दें[3](26) ऐ आदम के बेटे! तुम्हें शैतान उसी तरह धोखे में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे माँ–बाप को जन्नत से निकलवाया, उनके कपड़े उतरवाए ताकि उनकी शर्म की जगहें उनको दिखा दे, वह और उसकी फौज तुम्हें वहां से देखती है जहां से तुम उनको नहीं देख सकते, हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं रखते(27) और जब वे अशलील काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने इसी पर अपने बाप दादा को पाया है, और अल्लाह ने हम को यही आदेश दिया है, कह दीजिए कि अल्लाह अशलीलता का आदेश नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहते हो जो जानते नहीं[4](28) कह दीजिए कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है[5] और यह कि हर नमाज़ के समय अपने रुख़ को ठीक रखो और केवल उसी के आज्ञाकरी हो कर उसको पुकारो, जैसे उसने तुम्हें पहले बनाया फिर दोबारा बनाए जाओगे(29) एक गिरोह को अल्लाह ने रास्ता दिखाया और एक गिरोह पर गुमराही थुप गई उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बनाया और फिर यह समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं(30) ऐ आदम की संतान! हर नमाज़ के समय अपनी शोभा (की सामग्री) ले लिया करो और खाओ और पियो और अति मत करो, अल्लाह अति करने वालों को पसंद नहीं करता[5](31) पूछिए कि किसने अल्लाह के (दिए हुए) जीनत (शेभा के साधन) हराम किये जो उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किये हैं और साफ सुथरी खाने की चीज़ें, कह दीजिए कि वह संसारिक जीवन में ईमान वालों के लिए हैं, कयामत के दिन तो केवल उन्हीं के लिए हैं, हम उन लोगों के लिए इसी प्रकार निशानियाँ खोल खोल कर बयान करते हैं जो ज्ञान वाले हैं[6](32) कह दीजिए कि मेरे पालनहार ने हर प्रकार की अश्लीलता को

हराम किया वह उनमें खुली हुई हो या छिपी हुई हो और पाप को और नाहक ज़ियादती को और इसको कि तुम उसके साथ साझी ठहराओ जिसकी अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर वह बातें लगाओ जो तुम जानते नहीं(33) और हर उम्मत के लिए एक निर्धारित समय है बस जब उनका वह समय आ पहुंचता है तो वे एक क्षण के लिए भी न आगे हो सकते हैं और न पीछे(34) ऐ आदम की संतान![7] अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर जाएं जो मेरी आयतें तुम्हें सुनाते हों तो जिसने तकवा अपनाया और सुधार कर ली तो ऐसों पर न कोई डर है और न ही वे दुखी होंगे(35) और जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाई और वे उनसे अकड़े तो वे दोज़ख वाले हैं उसी में हमेशा रहेंगे(36) तो उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी निशानियों को झुठलाए ऐसों को लिखे हुए (भाग्य) से उनका हिस्सा मिल कर रहेगा[8] यहाँ तक कि जब हमारे फरिश्ते उनको मौत देने के लिए पहुंचेंगे तो वे कहेंगे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पुकारा करते थे वह कहां गए? वे कहेंगे वे सब हम से हवा हो गए और वे खुद अपने ऊपर गवाह होंगे कि इन्कार करने वाले वे खुद ही थे[9](37)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यह दुआ अल्लाह ही ने आदम अलैहिस्सलाम को सिखाई जैसा कि सूरह बरक: में गुज़र चुका है ''(आदम ने अपने पालनहार से कुछ कलिमे प्राप्त किए।

2. बज़ाहिर इसमें आदम व हव्वा के साथ इबलीस को भी संबोधित किया गया है, आगे इन्सान व शैतान की दुश्मनी का उल्लेख है।

3. बाहरी लिबास के साथ जिस से शरीर छिपाया जाता है एक आंतरिक लिबास भी है जिससे इन्सान की आंतरिक कमजोरियां छिपी रहती हैं।

4. अरबों में एक बेहूदा रिवाज यह था कि नंगे हो कर काबा का तवाफ़ करते थे और समझते थे कि जिन कपड़ों में गुनाह होते हैं उनमें तवाफ़ नहीं किया जा सकता, जब रोका जाता तो उसको अल्लाह का आदेश बताते और पूर्वजों से उसका सम्बंध बताते उसी के खण्डन के लिए यह आयतें उतरीं।

5. कबीला कुरैश के लोग ''हमस'' कहलाते थे और समझा जाता था कि केवल वही लिबास के साथ तवाफ़ कर सकते हैं दूसरा अगर लिबास पहनना चाहता है तो उनका लिबास पहने, अनावश्यक यह भेद था शायद इसीलिए विशेष रूप से ''न्याय'' का यहां उल्लेख किया जा रहा है।

6. ज़ीनत (शोभा) का सामान यानी लिबास।

7. विशेष कबीलों ने अपनी अलग पहचान के लिए कुछ चीज़ें हराम कर रखी थीं साफ़–साफ़ बयान किया जा रहा है कि पवित्र चीज़ें सब ईमान वालों के लिए वैध (जायज़) हैं और दुन्या की जिन्दगी में सब ही उनसे आनंदित हो रहे हैं हां आखिरत में वह सिर्फ ईमान वाले बन्दों के लिए हैं दूसरे उनसे वंचित कर दिए जाएंगे।

8. समस्त मानव जाति को आलमे अरवाह (आत्मालोक) में संबोधित किया गया था उसी को याद दिलाया जा रहा है।

9. यानी भाग्य में अल्लाह ने जिस के लिए जो लिख दिया है

शेष पृष्ठ .....13...पर..

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़ से सम्बन्धितः-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़ की बड़ी फज़ीलत बयान फरमाई है, आपने फरमाया ''ऐ लोगो तुम पर हज़ फर्ज़ किया गया है तो हज़ करो। हज की अहम्मीयत को सामने रखते हुए एक शख्स ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या यह हज हर साल में फर्ज है? आपने उसका कोई जवाब नहीं दिया, उसके बाद लोगों को सम्बोधित करके कहा कि अगर मैं यह कह देता कि यह हर साल फर्ज है तो अल्लाह तआला हर साल फर्ज़ कर देता, और तुमसे यह हर साल अदा न हो सकता, इस लिए मैं जितनी बात का हुक्म दूं उस पर अमल करो और जिन बातों से रोकूं रुक जाओ बे ज़रूरत सवाल न किया करो, अगली कौमें इसकी वजह से हलाक हो चुकी हैं।

(मुस्लिम)

हज पूरी उम्र में केवल एक बार फर्ज है आपने फरमाया है कि जिस शख्स ने खालिस अल्लाह को राजी करने के लिए हज किया और हज के सफर में न तो नफ़्स की इच्छाओं पर चला और न बेशर्मी की बात की और न किसी से लड़ाई झगड़ा किया और न दूसरी कोई बुराई की तो वह हज से वापस होगा तो गुनाहों से इस तरह पाक हो चुका होगा जिस तरह बच्चा माँ के पेट से पैदा होने के वक्त होता है। (बुखारी—मुस्लिम)

इसमें कुछ भी शक नहीं है कि हज से तमाम गुनाह मुआफ हो जाते हैं मगर मुआफ़ी की जो शर्तें कुर्आन और हदीस में हज़ के सही होने और गुनाहों के मुआफ होने के लिए लगाई गई हैं उनका पूरा करना भी जरूरी है। अब जो शख्स अल्लाह को राज़ी करने के बजाए दिखावे के लिए या केवल व्यापार के लिए हज करता है वह बुराईयों से बचने के बजाए हज काल में भी वह बुराईयां करता है ऐसे शख्स का हज कैसे क़बूल हो सकता है और उसके गुनाह कैसे मुआफ हो सकते हैं? जो हज के काल में व्यापार तथा नाम कमाने ब्लेक मार्केटिंग, इस्मग्लिंग और हाजी कहलाने के लिए हज करता है उसको हज की उक्त फजीलत कैसे मिल सकती है?

जो लोग हज करने का सामर्थ रखते हैं और फिर भी हज नहीं करते उनके विषय में आपने फरमाया कि जिस शख्स के पास हज के सफर का खर्च और सवारी की सुविधा हो और वह बैतुल्लाह (काबे) तक पहुंच सकता हो फिर भी वह हज न करे तो अल्लाह के निकट तो उसके मरने और यहूदी और नसरानी हो कर मरने में कोई अंतर नहीं है, बल्कि दोनों बराबर हैं। क्योंकि अल्लाह ने फरमाया हैः ''लोगों पर अल्लाह का हक है कि जिसको बैतुल्लाह तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह उस घर का

हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से बे नियाज़ा है''।

(तिर्मिजी–3:97)

हज न करने को कुफ्र कहा गया। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी ज़बानी ताकीद नहीं की अपितु सन् 1 हिज्री में सहाबा की बड़ी तादाद के साथ उमरा किया और सन् 10 हिज्री में सहाबा की एक लाख से ज़ियादा तादाद के साथ हज किया इस हज को ''हिज्जतुल वदाअ़'' कहते हैं इसमें आपने जो प्रसिद्ध भाषण दिया उसको ''खुत– बए– हिज्जतुल वदाअ़ कहते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारतः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी वफात के बाद जिसने मेरी क़ब्र की जियारत की गोया उसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। (दारकुतनी)

इस तरह की और भी कई रिवायतें हैं अगरचि यह रिवायतें सनद से कमज़ोर हैं लेकिन इतनी जियादा हैं कि उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत वाजिब नहीं तो वाजिब के करीब ज़रूर है।

जमहूर उलमा हज के बाद अगर कोई रुकावट न हो तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत को जरूरी करार देते हैं।

एक हदीस का भावार्थः–

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रख्ते सफ़र मत बांधों सिवाय तीन मस्जिदों के, मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा में) मेरी मस्जिद (मदीना मुनव्वरा में) और मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक्दिस में)। (अबू दाऊद)।

इस हदीस से कुछ लोगों ने समझा की किसी कब्र की जियारत के लिए सफर करना मना है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफर करने से रोका जाना साबित होता है, यही अर्थ प्रसिद्ध आलिम इमाम इब्ने तैमिया रह0 भी लेते हैं। अतः उनके निकट भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के लिए सफर करना मना है, ऐसा अर्थ लेने वाले कुछ लोग हज के दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए नहीं जाते हैं और कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद की जियारत की नीयत से मदीने का सफर करते और यहां पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की भी जियारत करते हैं और सलाम पेश करके सवाब लेते हैं परन्तु उम्मत के दूसरे उलमा विशेष कर हनफी उलमा हदीस का अर्थ यह लेते हैं कि किसी मस्जिद की जियारत करने और उसमें नमाज़ पढ़ने की नीयत से सफ़र करने में कोई फजीलत नहीं, सिवाए तीन मस्जिदों के मस्जिदे हराम, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद और मस्जिदे अक्सा, इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त

शेष पृष्ठ .....13...पर..

मुहर्रमुल हराम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम महीने का नाम है अल—हराम उसका गरूवाचक शब्द (सिफ़त) है जिसका अर्थ है सम्मानित, प्रतिष्ठित, मुहर्रमुल्हराम का अर्थ हुआ सम्मानित मुहर्रम पवित्र कुर्आन में है साल के बारह महीने हैं उनमें से चार सम्मानित हैं रिवायतों में वह चार सम्मानित महीने यह हैं, ज़ी क़अ़दह, ज़िल्हिज्ज, मुहर्रम और रजब। मुहर्रम इस्लामी हिजरी साल का पहला महीना है हर कैलेण्डर वाले अपने साल के पहले महीने के आने पर ख़ुशियां मनाते हैं मुसलमानों को भी मुहर्रम आने पर ख़ुशी होती है परन्तु इस वर्ष क्रोना ने उस ख़ुशी को मिट्टी में मिला दिया है मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ा को आशूरा कहते हैं यह बहुत ही बरकत वाला दिन है इस दिन रोजा रखना सुन्नत है लेकिन मुस्तहब ये है कि इस मुहर्रम के साथ नौ या ग्यारह एक दिन मिला कर रोज़ा रखा जाए लेकिन इसी दिन एक बड़ी दुखद घटना घटी है वह ये है कि करबला के मैदान में प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हज़रत हुसैन रज़ि0 को शहीद कर दिया गया इस्लाम में अल्लाह की राह में शहादत बड़ा दर्जा रखती है। ख़ुद हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत की तमन्ना की थी लिहाज़ा किसी का शहीद होना उसको बड़ा दर्जा पा लेना है लेकिन जो शहीद होता है उसके परिजनों को उसके मानने वालों को बड़ा दुख होता है अगरचि शहादत बड़ा पुरस्कार है परन्तु किसी की शहादत पर या उसकी शहादत के दिन पर ख़ुशी न मनाना चाहिए और न ही उस दिन को ग़म का दिन मानना चाहिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कितने लोग शहीद हुए बिअरे मउना में 69 सहाबा शहीद हुए हमारे हुज़ूर को इतना ग़म हुआ कि उन ज़ालिमों के लिए जिन्होंने शहीद किया था एक महीने तक नमाज़ में बददुआ करते रहे लेकिन उसके बाद न उस दिन को ख़ुशी का दिन मनाया न ग़म का, जंगे बद्र में कितने लोग शहीद हुए जंगे उहुद में 70 लोग शहीद हुए ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रिय चचा हज़रत हम्ज़ा शहीद हुए उनको सय्यदुशुहदा का ख़िताब मिला मगर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए न ख़ुशी का दिन मनाया न ग़म का इसी तरह कितने सहाबा

शहीद हुए हमारे हुजूर को उनकी शहादत पर दुख हुआ मगर उनकी शहादत के दिन को ग़म का दिन न मनाया। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत उमर रज़ि0 शहीद हुए, हज़रत उस्मान रज़ि0 शहीद हुए, हज़रत अली रज़ि0 शहीद हुए मगर सहाबा ने उनकी शहादत के दिन को ग़म का या ख़ुशी का दिन न मनाया अल्लाह उन सब से राज़ी हुआ इस तम्हीद की गरज़ ये है कि हम को हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत के दिन को ग़म का दिन न मनाना चाहिए इसी तरह हज़रत हुसैन को दूसरे सहाबा की शहादत से ऊँचा न बताना चाहिए, हज़रत उमर रज़ि0 का दर्जा उम्मत में दूसरा है, हज़रत उस्मान रज़ि0 का दर्जा तीसरा है, हज़रत अली रज़ि0 का दर्जा चौथा है। अल्लाह इन सब से राज़ी हुआ और हज़रत हम्ज़ा को हुजूर ने ख़ुद सय्यदुश्शुहदा कहा अल्लाह उनसे राज़ी हुआ लिहाज़ा हज़रत हुसैन को इन सब से दर्जे में नीचा ही समझना चाहिए और हज़रत हुसैन को सय्यदुश्शुहदा न कहना चाहिए अल्लाह उनसे राज़ी है इसी तरह उनकी याद में ताज़िया रखना ढोल, ताशे बजाना, नौहा, मातम करना ये सब नाजाइज़ है।

तमाम उलमा इसको नाजाइज़ कहते हैं यहां तक कि बरेलीवी मसलक के सबसे बड़े आलिम मौलाना अहमद रज़ा खाँ और उनके बेटे मौलाना मुस्तफ़ा रिज़वी ने भी ताज़िया दारी और नौहा मातम के ख़िलाफ फत्वा दिया है।

हज़रत हुसैन रज़ि0 लड़ने नहीं निकले थे वह तो कूफियों की दावत पर कूफा जा रहे थे यज़ीद ने कूफा के गवर्नर इब्ने ज़ियाद को हुक्म दिया कि हुसैन को कूफा मे दाख़िल न होने दें मगर बदबख़्त ने हज़रत हुसैन के क़ाफिले को कर्बला के मैदान में पाँच हज़ार फौज से घेर लिया और मुतालबा किया कि हुसैन रज़ि0 हमारे हाथ पर यज़ीद के लिए बैअ़त करें या फिर लड़ें हज़रत हुसैन ने इब्ने ज़ियाद के हाथ पर बैअ़त करने से इन्कार कर दिया और बड़ी उचित तीन बातें प्रस्तुत की–

1. हमको यज़ीद के पास जाने दिया जाये, हम उससे हाथ मिला कर अपना मामला ठीक कर लेगें।
2. या मुझे मक्का मुकर्रमा वापस जाने दिया जाए।
3. या मुझे किसी तरफ़ निकल जाने दिया जाए।

मगर बदबख़्त इब्ने ज़ियाद ने एक न मानी और दस मुहर्रम को फौज को हज़रत हुसैन रज़ि0 पर हमला करने का हुक्म दे दिया हज़रत हुसैन पाँच हज़ार फौज का मुक़ाबला कहाँ कर सकते थे वह अपने 72 जाँ निसारों के साथ शहीद कर दिये गये इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन इन शुहदा में 17 जवान हज़रत हुसैन रज़ि0 के खानदान के थे ख़ेमे में

शेष पृष्ठ .....19....पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नबूवत (दूतकर्म)का असल कारनामा

कुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क :–

अल्लाह के लिए किसी वस्तु को अस्तित्व प्रदान करना और फिर उसको दोबारा जीवन प्रदान करना दोनों समान रूप से सरल हैं, लेकिन इंसान के लेहाज़ से किसी वस्तु को दोबारा बनाना उसके पहली बार बनाने से अधिक सरल है। इसलिए जिसने एक बार अल्लाह के गुण 'सृष्ट' को स्वीकार लिया उसके लिए इस गुण का दोबारा मानना कोई कठिन कार्य नहीं (यानी यही अल्लाह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करेगा)।

अनुवादः– *वही है जो पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा पैदा करेगा, और यह दोबारा पैदा करना उसको ज़ियादा आसान है और आसमान और ज़मीन में उसकी शान सर्वोत्तम है और वह ज़बरदस्त युक्तिवान है।*

(सूरः अर्रूम–27)

अनुवादः– *क़यामत का इन्कार करने वाला इन्सान इस वास्तविकता को नहीं जानता कि हमने उसको नुत्फे (वीर्य) से बनाया, तो अब वह खुल कर आपत्ति करने लगा है तथा हमारी शान में अजीब बात कही और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहता है, मुर्दा हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है, जब कि वह बोसीदा (चूर–चूर) हो चुकी होंगी? ''कह दीजिए उनको वही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया था और वह हर प्रकार की पैदाइश को खूब जानता है, (वही है) जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे वृक्ष से आग पैदा की, फिर तुम उससे आग जलाते हो'' क्या वह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात की कुदरत नहीं रखता, कि इन जैसों को पैदा करे? क्यों नहीं और वह तो बड़ा पैदा करने वाला, महाज्ञाता है। उसकी शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे हुक्म देता है, कि हो जा, तो वह हो जाती है।*

अनुवादः *तो पाक (महिमावान) है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है, और उसी की ओर तुम लौट कर जाओगे। और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से ख़ास तरीक़े से पैदा किया फिर वह तुम्हें उसी में ले जाएगा और (क़यामत में) वही तुम्हें उसी से बाहर निकालेगा।*

(सूरः नूह 17–18)

फिर जिसने इस संसार में खुदा के गुणों का स्पष्ट रूप देखा है और जो उसकी कुदरत और हिक़मत से वाक़िफ़ है उसके लिए यह क्या अजीब चीज़ है:–

अनुवादः– *क्या उनको इसकी जानकारी नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं, वह अवश्य इसकी शक्ति रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, क्यों नहीं! वह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।*

(सूरः अहकाफ़–33)

अनुवादः— *क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा! हमने उसको कैसे बनाया और (तारों से) सजाया, और इसमें कोई रखना (दरार) नहीं और ज़मीन को हमने फैलाया और इसमें पहाड़ जमा दिये और हर तरह की इसमें सुन्दर चीज़ें उगायीं, इसमें अल्लाह की ओर झुकने वाले बन्दे के आँख खोलने तथा विचार करने का साधन है।*

और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग और फसल के अनाज और लम्बी–लम्बी खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं। यह सब बन्दों की रोज़ी के लिए है और हमने उस (पानी) से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह क़यामत के दिन निकलना होगा। (सूरः काफ़ 6–11)

अनुवादः— *हमने तुम को पहली बार पैदा किया, तो तुम (हमारे दोबारा पैदा करने को) सच क्यों नहीं मानते? तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ (नुत्फ़े) तुम गर्भाशय में टपकाते हो? क्या तुम उसे आकार प्रदान, कर देते हो या हम हैं आकार देने वाले? हमने तुम्हारी मौत का समय मुकर्रर किया और हम आजिज़ (असमर्थ्य) नहीं हैं, कि तुम्हारी तरह के और लोग पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी हालत में बना दें जिसे तुम जानते भी नहीं, और तुम तो पहली पैदाइश को जानते हो, तो फिर तुम (इसी से दोबारा पैदा किये जाने को) क्यों नहीं समझ लेते। अच्छा फिर यह बताओ कि जो बीज तुम धरती में डालते हो तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं? अगर हम चाहें तो उसे चूर–चूर कर दें और तुम अचंभित रह जाओ, और कहने लगो कि हम तो तावान में पड़ गये बल्कि हम तो बिल्कुल महरूम (वंचित) रह गये।'' अच्छा यह तो बताओ कि जो पानी तुम पीते हो? क्या तुमने उसको बादल से उतारा है, या उतारने वाले हम हैं? अगर हम चाहें तो खारा कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते? क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो? क्या तुमने उस वृक्ष को पैदा किया है, या उसके पैदा करने वाले हम हैं।*

(सूरः अल–वाकिआ 57–72)

अनुवादः— *क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जायेगा? क्या वह वीर्य की एक बूँद न था जो (गर्भाशय में) टपकाया गया? फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, तो अल्लाह ने उसको शरीर बनाया और उस (के अंगों) को दुरुस्त किया, फिर उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औरत, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को जिन्दा कर दें?*

(सूरः क़ियामह 36–40)

इस दुन्या पर ध्यान दे कर चिन्तन करने से इन्सान की अन्तर आत्मा स्वयं गवाही देती है कि इस दुन्या के बाद एक दूसरी दुन्या और इस ज़िन्दगी के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी होनी चाहिए जो इस दुन्या का उपसंहार हो। जिसमें इस ज़िन्दगी के कर्मों के परिणाम सामने आए, अगर यह दूसरी ज़िन्दगी नहीं तो दुन्या और यह सारा कारखाना बे मक़सद है। कुर्आन में मानव–स्वभाव को सम्बोधिक कर के फरमाया गयाः–

अनुवादः *क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जायेगा?*

(सूरः अल्–क़ियामह 36)

अनुवादः *क्या तुम ने यह समझा था कि हमने तुम को बेकार पैदा किया है, और तुमको हमारी ओर लौट कर नहीं आना है?''*

(सूरः अल् मोमिनून 115)

ज़मीन व आसमान के बारे में फरमायाः–

अनुवादः– *और हमने आसमान और ज़मीन को और उनके बीच के ब्रह्माण्ड को बेकार और बेमकसद नहीं पैदा किया है। (सूरः साद–27)*

अनुवादः *और हमने आसमानों व ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को तमाशे के तौर पर नहीं बनाया।*

(सूरः अद्–दुखान 38)

ज़मीन व आसमान और उनके अजायबात पर गौर करने से मनुष्य का अनतःकरण स्वयं गवाही देता है और उनकी ज़बान स्वयं इसका इकरार करती हैः–

अनुवादः– *बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात–दिन के अदल–बदल में, अक्ल वालों के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं, जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे (हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं) और आसमानों, और धरती की पैदाइश पर ग़ौर करते हैं। ऐ हमारे रब! तूने यह सब बेकार नहीं पैदा किया है, 'तू' पाक है, तू हमको दोज़ख के अज़ाब से बचा, ऐ हमारे रब! 'तूने' जिसे आग (जहन्नम) में डाला उसे रुसवा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (सूरः आले–इमरान 190–192)*

जारी.....

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

वह रोज़ी मिल कर रहेगी दुन्या में अल्लाह ने काफ़िर और मोमिन में कोई भेद नहीं किया इसलिए अगर दुन्या में किसी को धन की अधिकता है तो यह उसके स्वीकृत होने का प्रमाण नहीं है।

10. इन आयतों में आदेश है कि दुन्या ही दारुल अमल (कार्य स्थल) है जो यहां सही रास्ते पर चलेगा वही सफल होगा आखिरत में सारे तथ्य खुल कर सामने आ जाएंगे और गुमराह लोग अपनी गुमराही को खुद स्वीकार कर लेंगे लेकिन यह स्वीकार करना उनके काम न आ सकेगा।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की .....

किसी और मस्जिद के लिए सफ़र करने से रोका जाना समझा जाएगा, अगर इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त बिल्कुल सफ़र से रोका जाना समझा जाएगा तो न तिजारत के लिए सफ़र करना दुरुस्त होगा न इल्म हासिल करने के लिए न नौकरी के लिए और यह मतलब किसी के निकट सही नहीं है।

अतः इस हदीस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक क़ब्र की जियारत (दर्शन) के लिए सफ़र करने से मना साबित नहीं होता, बल्कि दूसरी हदीसों के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफ़र करना सवाब का काम है।

अरबी जानने वाले ध्यान दें:–

जब मुस्तस्ना मिन्हु मह़जूफ हो तो आमतौर से मुस्तस्ना की जिंस से समझा जाता है, इस हदीस में मुस्तस्ना मिन्हु मह़जूफ़ है और मुस्तस्ना मसाजिद है इसलिए मुस्तस्ना मिन्हु मस्जिद लेना चाहिए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना गुलाम रसूल मेहर —प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु

प्रारम्भिक हालातः—

हज़रत उस्मान रज़ि0 बनू उमय्या में से थे जो बनू हाशिम के बाद बनू अब्देमनाफ़ का दूसरा बड़ा घराना था। हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की तबलीग़ से इस्लाम के शुरु ही में मुसलमान हो गए थे, उनके चचा ने बड़ी तकलीफ़ें दी, लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि0 ने तमाम तकलीफ़ें सब्र से बरदाश्त कर लीं, आखिर चचा ने खुद हार मान ली।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ि0 की शादी हज़रत उस्मान रज़ि0 से कर दी जब हबश की हिजरत की इजाज़त हुई तो हज़रत उस्मान रज़ि0 अपनी बीवी के साथ हबश चले गये थे।

जब मुसलमान मदीना गये तो उनमें ग़रीबों को पानी की बड़ी तकलीफ़ थी, उस वक़्त मीठे पानी का एक कुवाँ ''बीरे रुमा'' था जो एक यहूदी की मिलकियत था। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कौन उसे ख़रीद कर आम मुसलमानों पर वक़्फ़ कर सकता है, हज़रत उस्मान रज़ि0 ने 12,000 (बारा हज़ार) दिरहम से आधा हिस्सा ख़रीद कर वक़्फ कर दिया, यहूदी ने कुछ देर बाद बाक़ी आधा भी आठ हज़ार दिरहम में हज़रत उस्मान रज़ि0 के हाथ बेच दिया, यह बहुत बड़ी इस्लामी खिदमत थी जो इस्लाम की गुरबत के ज़माने में हज़रत उस्मान रज़ि0 ने अनजाम दी। फिर तबूक के लिए फ़ौज तैयार हुई तो मुसलमानों पर बड़ी तंगी थी, हज़रत उस्मान रज़ि0 ने दस हज़ार सिपाहियों के लिए अपने पास से सामान दिया, एक हज़ार ऊँट, सत्तर घोड़े और एक हज़ार दीनार पेश किये, रसूले पाक सल्ल0 इतने ख़ुश हुए कि फरमाया आज के बाद उस्मान रज़ि0 का कोई काम उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचायेगा।

जंगे बदर के ज़माने में हज़रत रुक़य्या रज़ि0 का इन्तिक़ाल हो गया, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी तीसरी बेटी उम्मे कुलसूम रज़ि0 को हज़रत उस्मान रज़ि0 के निकाह में दे दीं चूंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियाँ हज़रत उस्मान रज़ि0 के घर पहुंची इस वजह से ज़ुननूरैन (दो नूर वाले) मशहूर हुए।

सुलह हुदैबिया के मौक़े पर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि0 को सफ़ीर (राज दूत) बना कर मक्का भेजा था, अफवाह उड़ी कि आप को शहीद कर दिया गया, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सुन कर 14 सौ सहा—बए—किराम

रज़ि0 से मौत पर बैत ली, यह ''बैत रिजवान'' कहलाती है, हज़रत उस्मान रज़ि0 की तरफ़ से खुद अपने एक हाथ पर दूसरा हाथ रख कर बैत की।

ख़िलाफत और फुतूहात (विजय):-

पहली ख़िलाफतों में अर्थात सिद्दीक़ी और फ़ारूक़ी काल में मुशीर परामर्शदाता के रूप में काम करते रहे।

हज़रत उमर रज़ि0 ने 6 आदमियों को ख़िलाफ़त के लिए नामज़द किया था।

सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0, तलहा रज़ि0, उस्मान रज़ि0, अली रज़ि0, जुबैर रज़ि0, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 ने यह तजवीज़ (प्रस्ताव) पेश किया कि पहले उम्मीदवारों की संख्या घटाई जाये और हर शख़्स अपनी तरफ़ से एक आदमी के हक़ में नाम वापस ले ले, हज़रत सअ़द रज़ि0 ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 का नाम पेश किया, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 ने अपना नाम वापस ले लिया, हज़रत तलहा रज़ि0 ने हज़रत उस्मान रज़ि0 का और हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 ने हज़रत अली रज़ि0 का नाम तजवीज़ किया, इस तरह चार उम्मीदवारों के नाम हट गये। हज़रत उस्मान रज़ि0 और हज़रत अली रज़ि0 रह गये, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने हर एक से अलग अलग मशवरे के बाद हज़रत उस्मान रज़ि0 के हक़ में फ़ैसला किया।

हज़रत उस्मान रज़ि0 की ख़िलाफ़त काल की महत्वपूर्ण घटनायें यह हैं:-

1. ईरान की फ़तह मुकम्मल हुई, ख़ुरासान, तबरिस्तान, तखरिस्तान आदि इलाक़े इस्लाम के ज़ेरनगीं (अधीनता) में आये।
2. पश्चिमी ओर तरबिलिग गर्व विजय हुए, तिवनिस, अल-जज़ायर और मराकश की ओर पेश कदमी शुरु हो गई।
3. रूमियों ने आक्रमण किया उन्हें पराजय दे कर भगा दिया गया।
4. कुछ इलाकों में बगावतें हुईं उन्हें ख़त्म कर दिया गया।
5. अनताकिया और तरलूस के बीच मुसलमानों की कालोनियाँ स्थापित की गईं।
6. मर्व, तालिक़ान, फ़ाराब और जूज़जान विजय हुये।

समुद्री जंगें:-

हज़रत उस्मान रज़ि0 के ज़माने में शाम (सीरिया) के गवर्नर अमीर मआविया रज़ि0 और मिस्र के गर्वनर अब्दुर्रहमान बिन अबी सरह ने समुद्री बेड़े तैयार किये, हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 ने जज़ीरा क़बरस पर हमला करके उसे फ़तह कर लिया, 651-653 ई0 में रूमी 500 जहाज़ों का बेड़ा लेकर शाम (सीरिया) के तट पर हमला वर हुए। हज़रत अमीर मआविया रज़ि0 और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के बेड़ों ने मिल कर मुक़ाबला किया, घमासान का रन पड़ा, इस्लामी बेड़े ने शानदार विजय प्राप्त की, रूमियों के बहुत ज़हाज़ तबाह हो गये, जो थोड़े से बचे वह भाग निकले। हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 ने कुस्तुन्तुनिया पर भी हमला किया।

❖ ❖ ❖

ईदुल अज़हा (बक़र ईद)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अलहम्दुलिल्लाह ईदुल अज़हा आ गई, अपने सभी प्रिय पाठकों को मुबारक बाद देता हूँ, अल्लाह करे यह ईद बराबर खुशियां लाती रहे, अल्लाह तआ़ला आपको वर्ष के हर दिन खुशियां प्रदान करे तथा हर कष्ट हर दुख और आपदाओं से सुरक्षित रखे, आमीन।

अल्लाह तआला ने ईमान वालों को वर्ष में दो दिन खुशियां मनाने को दिये हैं, एक ईदुलफ़ित्र जो रमज़ान के रोज़ों के समापन पर पहली शव्वाल की मनाई जाती है, दूसरी 10 ज़िल्हिज्ज को, 10 जिल्हिज्ज को धनवान (साहिबे निसाब) मुसलमान कुर्बानी करते हैं, यद्यपि निर्धन मुसलमानों पर कुर्बानी वाजिब नही है लेकिन कुर्बानी करने वालों की ओर से उनको भी गोश्त पहुंच ही जाता है, अर्थात कुर्बानी के गोश्त से धनवान तथा निर्धन सभी लाभान्वित होते हैं, इसी लिए इस ईद को ईदुल अज़्हा अथवा कुर्बानी की ईद कहते हैं। कुछ लोग इसे ईदे कुर्बा और कुछ लोग बकरईद भी कहते हैं, निर्धनों तक कुर्बानी का गोश्त पहुंचाने की व्यवस्था शरीअ़त ने इस प्रकार की है कि कुर्बानी का तिहाई भाग निर्धनों को पहुंचाना मुस्तहब (सवाब का काम) बताया गया है। यदि कुर्बानी करने वाले इसका प्रबन्ध करें तो कोई निर्धन कुर्बानी के गोश्त से वंचित नहीं रह सकता।

निर्धन कुर्बानी करे या न करे, उस तक कुर्बानी का गोश्त पहुंचे या न पहुंचे 10 ज़िलहिज्ज उसकी भी ईद है जैसे धनवानों की ईद। वह भी 10 जिलहिज्ज को बहुत सवेरे उठता है फ़ज्र की नमाज़ में तक्बीरे तशरीक़ पढ़ता है यह तक्बीर हर व्यस्क मुसलमान के लिए 9 ज़िलहिज्ज की फ़ज्र से 13 जिलहिज्ज की अस्र तक हर फ़र्ज नमाज के सलाम फेरने के बाद कहना अनिवार्य है। मर्द इसे आवाज़ से कहते हैं औरतें आहिस्ता कहती हैं, तक्बीर के बोल यह हैं—

''अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द''

अनुवादः अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, तथा हर प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं।

तात्पर्य यह है कि निर्धन मुसलमान भी धनवान मुसलमान की भांति 10 ज़िलहिज्ज को भोर में शीघ्र उठता है फज्र की नमाज़ पढ़ता है, नहाता है, दातून करता है, अल्लाह ने जो दिये हैं अच्छे तथा स्वच्छ कपड़े पहनता है, यदि उपलब्ध है तो सुगन्ध लगाता है, ऊपर वाली तक्बीर कहते हुए ईदगाह या जहां भी ईद की नमाज़ उसे पढ़ना है, जाता है, ईद की नमाज़ अदा करता है, वापसी में सम्भव हुआ तो रास्ता बदल कर आता है, और अल्लाह ने जो दे रखा है अच्छा पकवा कर अपने बच्चों तथा परिवार के साथ खा कर खुशियां मनाता है।

धनवान लोग कुर्बानियां

करने लग जाते हैं कुर्बानी के पशु अब बहुत मंहगे हो गये हैं। मध्यम वर्ग के लोगों के लिए कुर्बानी का जानवर खरीदना कठिन हो गया है, कुर्बानी के जानवर अधिक मंहगे होने के कारण यह हैं, एक तो यह कि अब कुर्बानी करने वालों की संख्या पहले के समक्ष बहुत बढ़ चुकी है, दूसरे अब जानवरों के चरने की जगहें नहीं रह गई हैं, इसलिए लोग जानवर नहीं पालते हैं तथा उनका उत्पादन नहीं हो पाता है, मुसलमानों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कुर्बानी करने वाले धनवान (साहिबे निसाब) दो प्रकार के हैं, एक तो वह जिनकी निजी आय बहुत ज़ियादा है, वह सरकारी नौकर हैं पचास हज़ार से अधिक वेतन हैं, डॉक्टर हैं प्रतिमाह लाखों से ऊपर की कमाई है, बड़ा कारोबार है बाहर देशों में कारोबार अथवा नौकरी है, ऐसे सभी लोगों के लिए जानवरों के मंहगे होने की कोई समस्या नहीं, वह तो मंहगे से मंहगा जानवर खरीद कर कुर्बानी करते हैं, परन्तु मध्यम वर्ग के वह लोग जो मजदूरी मेहनत से या खेती बाड़ी से अपना खर्च चला लेते हैं, भूखे नंगे नहीं रहते किसी के मुहताज भी नहीं रहते किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती, परन्तु उनके घर की स्त्रियों के पास गहने हैं जो बहुत तो नहीं हैं परन्तु निसाब के कहीं अधिक हैं, ऐसे लोगों की ऊपर की कोई आय नहीं, दस बीस हज़ार रूपया एकत्र करना उनके लिए कठिन होता है, ऐसे परिवार के लोग यदि घर का एक मुखिया नियत कर लें जिस प्रकार वह घर का मालिक है, घर की औरतें गहने शौक़ से पहने परन्तु उन गहनों का मालिक घर के मुखिया को बनाए ऐसे में यदि उस परिवार के मुखिया की ओर से कुर्बानी कर दी जाय तो यह काफ़ी होगी, परन्तु यदि हर औरत अपने निसाब भर के ज़ेवर की मालिक रहेगी तो उस पर कुर्बानी वाजिब होगी इसी प्रकार यदि बेटे सम्मिलित खानदान में रहते हुए अलग अलग अपने को निसाब का मालिक बनाएंगे तो उनको भी कुर्बानी करना होगी।

आज कल कुर्बानी में विशेष कर बड़े जानवरों की कुर्बानी में कुर्बानी के जानवर की आयु की समस्या है कुछ समितियां लोगों के पैसे ले कर उनकी ओर से पड़वे खरीद कर कुर्बानी कर देती हैं, ऐसी कुछ समितियां बाजार से पड़वे खरीदती हैं बेचने वाले कह देते हैं कि पड़वे की आयु दो वर्ष है जब कि उसकी आयु दो वर्ष नहीं होती, यदि दो वर्ष से कम आयु के पड़वे की कुर्बानी की जाएगी तो कुर्बानी नहीं होगी। अतः कुर्बानी में हिस्सा लेने वालों को चाहिए कि जानवर अपनी आंखों से देख ले दो वर्ष आयु होने की पहचान पड़वे का दांतना है, जिसको दांतने की पहचान न हो वह किसी जानवर पालने वाले मुसलमान से उसकी पुष्टि कर ले ताकि कुर्बानी सही हो जाए। यह समस्या उस समय आती है जब पड़वा बिलकुल बच्चा दिखता है।

हनफी उलमा के निकट कुर्बानी 10 जिलहिज्ज को ईद की नमाज़ के बाद से 12 जिलहिज्ज की मग़रिब से पहले तक दुरुस्त है, जमहूर उलमा का यही मसलक हैं, लेकिन अहले हदीस हज़रात किसी रिवायत की बिना पर 13 जिलहिज्ज को भी कुर्बानी

करते हैं हनफी हज़रात को उनसे झगड़ने की ज़रूरत नहीं परन्तु हनफ़ी यदि 13 को कुर्बानी करेंगे तो कुर्बानी न होगी।

कुर्बानी अल्लाह को राजी करने वाली बहुत ही महत्वपूर्ण उपासना है अतः जिसे अल्लाह तौफ़ीक दे वह इसमें कोताही न करे।

एक सज्जन एक मुसलमान से कहने लगे कि किसी का जीव मारना यह उपासना कैसे हो सकती है यह तो एक प्रकार का पाप है, इससे अच्छा तो यह है कि जो पैसे कुर्बानी का जानवर खरीदने में लगाते हैं वह किसी गरीब को दे दिये जाएं वह उनसे अपनी ज़रूरतें पूरी करे। मुसलमान युवक ने उत्तर दिया मेरे भाई, अल्लाह ने आपको जो बुद्धि दी है उसके अनुसार आपने जो सही समझा कहा परन्तु इस्लाम के कार्य अपनी बुद्धि से नहीं बनाए गए हैं, अपितु सबके सब अल्लाह के आदेशानुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए हैं यद्यपि इस्लाम का कोई कार्य बुद्धिहीन नहीं है यह अलग बात है कि हमारी सीमित बुद्धि उसको भली भांति समझ न पाए।

ध्यान दीजिए इस संसार में जो जन्म लेता है उसका एक दिन देहान्त हो जाता है यह बात सत्य है या नहीं? सज्जन पुरुष ने कहा अवश्य ऐसा होता है।

मुस्लिम युवकः बहुत से लोग एक्सीडेन्ट (दुर्घटना) में मरते हैं, कितने लोग रोगों से मरते हैं, कितने का हार्ट फ़ेल हो जाता है, कोई कालरा (हैजा) से मरता है, कोई सुगर रोग में तो कोई छय रोग में कोई सांप काटने से मरता है, तो कोई पानी में डूब कर मर जाता है, कोई आग से जल कर मरता है, तो किसी को कोई हिन्सक पशु खा जाता है।

सज्जन पुरूषः हाँ हाँ यह सब होता है, ईश्वर जिसे जैसे चाहता है उसका अन्त कर देता है।

मुस्लिम युवकः अच्छा तो यह बताइए क्या ईश्वर अत्याचारी है जो लोगों की इस प्रकार जानें ले लेता है।

सज्जन पुरूषः ईश्वर को अत्याचारी नहीं कह सकते सारी सृष्टि उसने रची है, रचयता वही है निर्माता वही है वह अपनी निर्मित जानों का अन्त जैसे चाहे करे, वह अत्याचारी नहीं वह तो महा कृपालू तथा बड़ा दयालु है यदि वह किसी को मौत न दे तो सोचो क्या हो?

मुस्लिम युवकः ईश्वर ने बहुत से जीव जन्तु ऐसे बनाए हैं जिनका आहार दूसरे जीवों तथा पशुओं का मांस है कुछ को मरे हुए पशुओं का मांस तो कुछ को जीवित पशु पक्षियों का मांस जैसे बाज़ पक्षियों में, भेड़िया बाघ चीता, तेन्दुआ, हिन्सक जन्तुओं में यह हिन्सक जन्तु दूसरे जीव को मार कर खाएं या अपनी जान गवाएं आप इस विषय में क्या कहते हैं?

सज्जन पुरूषः मैं तो यही कहूंगा कि ईश्वर की मरजी, जिसे जैसे चाहा निर्मित किया यह सब उसकी माया है हमको ईश्वरीय कर्मों पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं।

मुस्लिम युवकः मेरे भाई इसी प्रकार मनुष्य को ईश्वर ने ऐसी सृष्टि बनाया है जो अनाज भी खाता है और पशुओं का मांस भी खाता है, यदि संसार में मांस खाना रोक दिया जाए तो बड़ी ही कठिनाई का सामना हो, अलबत्ता हम मुसलमान अपनी बुद्धि से किसी पशु का मांस नहीं खाते, अपितु ईशादेश से उसके नियमों के अनुसार खाते हैं

इसी पर कुर्बानी के सवाब को समझ लीजिए, अल्लाह (ईश्वर) ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा आदेश दिया कि धनवान कुर्बानी करे अतः यह उपासना है और इस पर सवाब है, यदि वह कुर्बानी न करें तो पापी होंगे।

सज्जन पुरूषः मेरे भाई मैं समझ गया आप मुझे ईश्वर का वह आदेश बताइये जिसमें गोश्त खाने तथा कुर्बानी करने का उल्लेख है, ताकि मैं अपने दूसरे लोगों को बता सकूं कि मुसलमान ईशादेश से कुर्बानी करते तथा ज़ब्ह करके कुछ विशेष पशुओं का मांस खाते हैं।

मुस्लिम युवकः

पवित्र कुर्आन में आया हैः–

"अतः जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अर्थात जिस हलाल जानवर को अल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह किया गया हो, उसे खाओ, यदि तुम उसकी आयतों को मानते हो"। (सूरः अनआ़मः118)

क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीजों में से चौपाये पैदा किये और अब वे उनके मालिक हैं। और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उनमें से कुछ तो उनकी सवारियां हैं और उनमें से कुछ को वे खाते हैं। (यासीनः71,72)

यह तो गोश्त खाने का सुबूत है। कुर्बानी का सुबूत सुनियेः

"और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में (अर्थात 10 जिलहिज्ज से 12 जिलहिज्ज तक) उन चौपाए अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें (अर्थात कुर्बानी करें) जो उसने उन्हें दिये हैं। फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ"। (अल हज्जः28)

"कुर्बानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है। तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। (अर्थात नहर करो) फिर जब उनके पहलू भूमि से आ लगें तो उनमें से स्वयं भी खाओ और संतोष से बैठने वालों को भी खिलाओ और मांगने वालों को भी। ऐसा ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ"। (अलहज्जः36)

❖❖❖

मुहर्रमुल हराम.....

औरतें थीं और हज़रत ज़ैनुल आबदीन जो अच्छे जवान थे वह बीमार थे वही बच सके और हज़रत हुसैन की नस्ल उन्हीं से चली

बेशक शहीदों का बड़ा दर्जा है अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनको मुर्दा मत कहो वह ज़िन्दा हैं वह अल्लाह की तरफ़ से ख़िलाए पिलाये जाते हैं, शहादत का दर्जा इतना ऊँचा है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत की तमन्ना की थी। बेशक हज़रत हुसैन शहीद हैं उनके 72 साथी शहीद हैं वह सब जन्नत में हैं मगर उनकी शहादत की याद में ताज़िया, नौहा मातम करना हराम है। किसी कवि ने क्या ख़ूब कहा है–

रोयें वो जो मुन्किर हों हयाते शुहदा के
हम ज़िनद–ए–जावेद का मातम नहीं करते

(बहुत ही संक्षिप्त बयान लिखा गया)।

❖❖❖

हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का ख़्वाब

—हिन्दी इमलाः राशिदा नूरी

ख़्वाब इक देखा ख़लीलुल्लाह ने
था दिखाया ख़्वाब वह अल्लाह ने

ज़ब्ह़ बेटे को हैं अपने कर रहे
ज़ब्ह रब के हुक्म से हैं कर रहे

समझे ग़ैबी है इशारा ये मुझे
''ज़ब्ह कर बेटा'' इशारा है मुझे

बोले बेटे से कि देखा ख़्वाब है
क्या बताऊँ कैसा देखा ख़्वाब है

ज़ब्ह़ तुझको कर रहा हूं ख़्वाब में
चाहता क्या रब है मुझ से ख़्वाब में

मेरे बेटे राय अपनी तू बता
क्या करूँ इस ख़्वाब पर अब तू बता

बोला बेटा दिल के इतमीनान से
और कहा यूं क़ूवते ईमान से

ज़ब्ह़ मुझको मेरे अब्बा कीजिए
हुक्म रब है इसको पूरा कीजिए

शाकिरो साबिर ही पायेंगे मुझे
और मुतीअ़े रब ही पायेंगे मुझे

अलगरज़ पहुंचे मिना दोनों बुजुर्ग
रब के वह महबूब हम सबके बुजुर्ग

आँखों पे पट्टी वह अपनी बाँध कर
और लिटाया बेटे को वाँ ख़ाक पर

चल रही थी अब छुरी हलक़ूम पर
अपने प्यारे बेटे के हल्क़ूम पर

तब निदा आई कि ऐ प्यारे मेरे
ख़्वाब को सच्चा किया प्यारे मेरे

हुक्मे रब से पहुंचे फिर जिब्रील वाँ
गोस्फन्द जन्नत से ले जिब्रील वां

जगह पर बेटे की था अब गोस्फन्द
हुक्मे रब है ज़ब्ह ये हो गोस्फ़न्द

आँखों से पट्टी जो खोली आप ने
ज़ब्ह पाया गोस्फन्द वां आप ने

बेटे को सालिम जो देखा आप ने
रब का अपने मन्शा समझा आप ने

जान लेना बेटे की मक़सद न था
इम्तिहां था और कुछ मक़सद न था

इम्तिहां में मेरे तू फाइज़ हुआ
तू मेरा है दोस्त ये साबित हुआ

यूं फिरिश्तों पर भी ये ज़ाहिर हुआ
ख़ल्क़ में इन्सान है सबसे बढ़ा

अहले सरवत जो भी इस उम्मत में हैं
हुक्म उन को है कि कुर्बानी करें

जारी हो सुन्नत खलीलुल्लाह की
है हिदायत यह रसूलुल्लाह की

रहमतें या रब रसूलुल्लाह पर
रहमतें या रब खलीलुल्लाह पर

कुर्बानी (बलिदान)

—मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

हज की तरह ईदुल अजहा की कुर्बानी भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उस कुर्बानी की यादगार है जो उन्होंने अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के गले पर छुरी फेर कर काइम की थी। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ''कुर्बानी तुम्हारे पितामः इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यादगार है'' पवित्र कुर्आन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी का विस्तार से वर्णन है, पवित्र कुर्आन में है कि अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बुढ़ापे में जो पहली सन्तान दी थी वह हज़रत ''इस्माईल'' थे, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जो यद्यपि समझदार हो गये थे परन्तु अभी अव्यस्क थे कि एक दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने स्वप्न देखा कि वह अपनी इक्लौती सन्तान को खुदा की राह में कुर्बान कर रहे हैं, नबियों का ख्वाब चूंकि सच्चा होता है इसलिए उन्होंने इसको इशा —रए—गैबी (परोक्ष संकेत) समझा और बेटे से कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि मैं तुमको अपने हाथों से कुर्बान (ज़ब्ह) कर रहा हूं, तुम्हारी क्या राय है, हज़रत इस्माईल यद्यपि बच्चे थे परन्तु अल्लाह ने बचपन ही से उनके हृदय में नुबूवत का प्रकाश डाल रखा था। अतः एक आज्ञाकारी पुत्र के समान बाप से कहा कि मेरे पिता आपको जो अल्लाह का आदेश मिला है उसको पूरा कीजिए इन्शाअल्लाह आप मुझको धैर्यवान पाएंगे, मैं अल्लाह की राह में कुर्बान होने में कोई घबराहट नहीं पाता हूं। अतएव दोनों महापुरुषों ने अल्लाह के आदेश के आगे सर झुका दिया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़ब्ह करने के लिए करवट लिटा दिया, करवट इसलिए लिटाया कि बाप की निगाह बेटे के मुख पर न पड़े, हो सकता है कि बाप का प्रेम रुकावट डाले और छुरी रुक जाये, अल्लाह को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की जान नहीं लेना थी अपितु हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की परीक्षा लेना थी और उस ईमानी भावना की परीक्षा लेनी थी जिसकी बिना पर आदमी अपनी अति प्रिय वस्तु को कुर्बान करने से पीछे नहीं हटता, अतएव जब उनके ईमान की सच्चाई का प्रमाण मिल गया तो अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को आदेश दिया कि जन्नत से एक दुम्बा ले जाओ और इब्राहीम से, इस्माईल की जगह पर दुम्बा जब्ह कराओ और ऐसा ही हुआ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुम्बा जब्ह किया रिवायत में आता है कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आँख पर पट्टी बांधे हुए छुरी चला रहे थे तो हज़रत

शेष पृष्ठ .....40...पर..

स्वतंत्रता दिवस

—मुहम्मद गुफ़रान नदवी

स्वतंत्र भारत के इतिहास में 15 अगस्त एक महत्वपूर्ण तिथि है, 15 अगस्त 1947 को हमारा देश अंग्रेज़ी साम्राज्य से मुक्त हुआ, स्वतंत्रता प्राप्त करने में दीर्घ काल तक अंग्रेज़ों से एक लम्बा संघर्ष चला, इस संघर्ष में लाखों इन्सान मौत की भेंट चढ़ गए, कितनों को फांसी की सज़ा हुई, कितनों को काले पानी की सज़ा सुनाई गई कितनों को तोप के दहाने में बांध कर उड़ाया गया, यह एक दर्दनाक कहानी है जिसका सही अन्दाज़ा हमारी नई पीढ़ी के लोग नहीं कर सकते, सच्ची बात यह है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने के लिए बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी, हमारे पूर्वजों की ज़बरदस्त क़ुर्बानी और बड़ा बलिदान इस स्वतंत्रता संग्राम में शामिल है, स्वतंत्रता सेनानियों की हमारे सामने बड़ी लंबी सूची है। इस छोटी सी पत्रिका में संभव नहीं कि उन सेनानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाए। इस समय हम केवल उन महान व्यक्तियों का उल्लेख करेंगे जिनका नाम इतिहास में उज्जवल है, उन्होंने अपने कारनामों से दुनिया के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाया और इस प्रकार वह अपने बाद के आने वालों के लिए मार्ग दर्शक बने। सबसे पहले अंग्रेज़ों के ख़तरे को जिसने महसूस किया और भांपा वह मैसूर (करनाटक) के राजा फतेह अली ख़ाँ सुल्तान टीपू थे, उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ अपनी चालाकी और राजनीति से एक के बाद एक प्रान्त पर क़ब्ज़ा करते जा रहे हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण देश उनकी मुट्ठी में चला जायेगा, टीपू सुल्तान ने अपने समकालीन राजाओं, महाराजाओं को इस ख़तरे से आगाह किया और कहा कि जिस तेज़ी के साथ अंग्रेज़ देश के विभिन्न क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमाते जा रहे हैं, आवश्यकता है कि हम सब एक जुट हो कर एक सामूहिक संगठन बना कर उनका मुक़ाबला करें, इस संबन्ध में न केवल उन्होंने देश के राजाओं को अंग्रेजों से लड़ने पर आमादा किया बल्कि विदेश के मित्र शासकों से पत्र व्यवहार किया, बहर हाल बड़ी वीरता और सैनिक दक्षता के साथ टीपू सुल्तान ने अंग्रेज़ों से युद्ध किया जिस का लोहा सबने माना, परन्तु चालाक अंग्रेज़ों ने दक्षणी भारत के कुछ अमीरों को अपने साथ मिला लिया जिसके कारण भारत वर्ष का एक वीर सपूत संरंगापटम के मैदान में 4 मई 1799 में शहीद हो गया। उन्होंने अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार न करके एक स्वाभिमान वीर की मौत को प्रमुखता दी और सदैव के लिए जीवित हो गये। इतिहास में उनका यह वचन प्रसिद्ध हो गया ''गीदड़ की सद साला ज़िन्दगी से शेर की एक दिन की ज़िन्दगी अच्छी है''।

जब अंग्रेज़ जनरल हार्स को सुल्तान टीपू की शहादत की ख़बर मिली तो उसने उनकी लाश पर खड़े हो कर यह शब्द कहे कि:

"आज से हिन्दुस्तान हमारा है"

अंग्रेज़ जनरल के इन शब्दों में कितनी वास्तविकता थी, इतिहास आपके सामने है– गांधी जी ने अपनी पत्रिका "यंग इण्डिया" में सुल्तान टीपू की बड़ी प्रशंसा की और देश प्रेमी की हैसियत से सराहना करते हुए लिखा था "वतन और क़ौम के शहीदों में उन से बलन्द मरतबा कोई न था"। फतेह अली खाँ सुल्तान टीपू ने अपनी शहादत से देश वासियों को पैग़ाम दिया कि इज्ज़त के साथ रहो और इज्ज़त के साथ मरो। अंग्रेज़ों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था, भारत को दो प्रकार से नुक़सान पहुंचा रहे थे, भारत जैसे धनवान देश का पूर्ण रूप से शोषण कर रहे थे, दूसरे यहां की एकता और भाई चारे के माहौल को नष्ट भ्रष्ट कर रहे थे। जिसके परिणाम स्वरूप यहां की हिन्दू मुस्लिम जन्ता एक जुट हो कर भारत के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र के नेतृत्व में अंग्रेज़ों के विरुद्ध अलमे बग़ावत बलन्द किया, परन्तु उचित व्यवस्था की कमी और ग़लत नीति की वजह से भारतीय सेना प्राजित हो गई, सम्राट के कई लड़कों के सर क़लम कर दिये गये और बहादुर शाह को बन्दी बना कर रंगून में क़ैद कर दिया गया जहां बड़ी बेकसी की हालत में उन की मौत हो गई। अंग्रेज़ों ने जुल्म और ज़ियादती की छाया में अपना शासन भारत में स्थापित कर दिया, परन्तु राष्ट्र प्रेमियों और वतन प्रेमियों ने दिल से उनके शासन को स्वीकार नहीं किया और स्वतंत्रता के लिए अपना आन्दोलन जारी रखा, यहां तक ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने घुटने टेक दिये, और अपने अन्तिम वाइसराये लार्डमाउन्टविटन द्वारा आज़ादी का परवाना दे दिया। 15 अगस्त 1947 को लालक़िले पर तिरंगा झण्डा लहराया गया। स्वतंत्र भारत के सबसे पहले गवर्नर जनरल गोपाल आचार्या बने जनवरी 1948 में जब भारत का संविधान तैयार हो गया तो सर्व प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद बनाए गये, और उप राष्ट्रपति डॉ0 राधा कृष्नन। इसी प्रकार सर्व प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू हुए। यह स्वतंत्रता दिवस जो बड़ी कुर्बानी और बलिदान से प्राप्त किया गया यदि हम ने इसकी महत्ता और मूल्य को न समझा तो देश ख़तरे में आ जायेगा, देश की शक्ति का रहस्य यहां की एकता और भाईचारे में है, भारत वर्ष ऐसा देश है जिसमें नाना प्रकार की जातियां और नाना प्रकार के धर्म हैं भारतीय संविधान का निर्माण इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए किया गया। देश के हर वर्ग को इसका अधिकार है कि वह अपनी सामाजिक और धार्मिक विशेषताओं के साथ रहे, स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं कि दूसरों के अधिकारों का हनन हो, और दूसरों को कष्ट दिया जाये, अनेकता में एकता इसी रूप में बाकी रह सकती है, हमारा देश एक

शेष पृष्ठ .....40....पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

प्रश्नः आज कल कोरोना के मरज़ के सबब हुकूमत ने मस्जिदों में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना रोक दिया, हम मुसलमानों ने भी जमाअ़त की नमाज़ छोड़ दी, मगर जुमे की नमाज़ तो बग़ैर जमाअ़त के हो नहीं सकती आप इस बारे में क्या कहते हैं?

उत्तरः कोरोना एक जान लेवा मरज़ है सारी दुन्या के डॉक्टरों का कहना है कि इस ख़तरनाक मरज़ की कोई मुतअ़य्यन दवा नहीं है, अंदाज़े से कुछ दवाओं से इलाज किया जाता है और उसमें तक़रीबन पचास–साठ फीसद की कामयाबी भी है। लेकिन इस मरज़ को फैलने से रोकने के लिए जो एहतियातें बताई गईं है, जैसे मास्क पहनना दो आदमियों के बीच मुनासिब दूरी रखना और हाथों की सफाई रखना लाज़मी है।

जमाअ़त की नमाज़ बहुत अहम है लेकिन जब तन्हा नमाज़ अदा हो जाती है तो इस ख़तरनाक मरज़ से अपने को बचाने के लिए और अपनी जान बचाने के लिए जमाअ़त की नमाज़ छोड़ देने में इंशाअल्लाह कोई गुनाह न होगा। रही बात जुमे की नमाज़ की तो उसके बदले में ज़ुह्र पढ़ लेने में इंशाअल्लाह कोई गुनाह न होगा। अलबत्ता जिस मस्जिद में जुमा होता है वहां जुमे की अज़ान हो और चार–पाँच आदमी जमा हों इमाम मुख़्तसर खुतबा पढ़ कर मुख़्तसर नमाज़ पढ़ा कर लोगों को फौरन रवाना कर दे।

प्रश्नः हुक्म है कि दो लोग मिले नहीं न मुसाफहा करें न गले मिलें लेकिन घर में इस पर अमल कैसे हो, खाना पकाने वाला और खाना पेश करने वाला इस पर अमल कैसे करें, इसी तरह खुदा न चाहे जनाज़ा हो जाए तो उसको नहलाना कफनाना कब्रिस्तान ले जाना और दफनाना कैसे हो?

उत्तरः आम मुलाक़ात पर कुछ फासले से सलाम करें न गले मिलें, न हाथ मिलायें लेकिन घर में खाना पकाने वाला खाना पेश करने में यह फासला नहीं रख सकता, एक दूसरे को टच किये बगैर काम नहीं चल सकता फिर भी जहां तक मुम्किन हो एहतियात पर अमल करें। रहा जनाज़ा तो उसमें मास्क लगा कर दस्ताने पहन कर जनाज़े को नहलाएं, यह काम एक आदमी से नहीं हो सकता, दूसरा मदद करने वाला भी मास्क पहने रहे और दस्ताना पहन कर मदद करे। कफनाने के वक़्त भी नया दस्ताना पहन लेना चाहिए। जनाज़े को क़ब्रिस्तान ले जाना ज़रूरी है एहतियात से ले जायें। जनाज़े की नमाज़ जो बहुत मुख्तसर होती है एहतियात से पढ़ें, जो लोग जनाज़े में शिर्कत करें सब मास्क ज़रूर पहनें, जनाज़ा उतारने वाले मास्क भी पहनें और दस्तादाना भी पहने और तदफीन का अमल एहतियात के साथ अंजाम दे कर घर वापस आ जाएं। जो लोग जनाज़े में शरीक हों

–मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

वह दो गज़ न सही मगर थोड़ा फासला जरूर रखें।

इसी तरह निकाह और वलीमा की तकरीबात चाहे जितनी मुख़्तसर की जाए उसमें दो गज़ का फासला ना मुम्किन है, अलबत्ता चाहिए कि चिपक चिपक कर न बैठें कुछ फासला ज़रूर रखें, दूल्हा और क़ारी साहिब ईजाब व क़बूल के वक़्त और खाने के वक़्त के अलावा मास्क पहने रहें, खाने में प्याज़ का सलात लाज़िमन हो इसलिए कि प्याज़ की बू जरासीमकुश होती है ज़रूरत पूरी होन पर सब लोग अपने अपने घर चल दें, बे ज़रूरत मज्लिसें न करें।

अल्लाह का शुक्र है कि कोरोना के टीके का आविष्कार हो चुका है, अभी वह तजरिबे के दौर में है इनशाअल्लाह उससे सारी मुश्किलें दूर हो जायेंगी।

प्रश्नः कुर्बानी किन लोगों पर वाजिब है?

उत्तरः जिन लागों के पास कुर्बानी के दिनों में 612 ग्राम 36 मिली ग्राम (साढ़े बावन तोला) चाँदी हो या उसकी कीमत के पैसे मौजूद हों या उसकी मालियत के बराबर का सामान ज़रूरी इखराजात से ज़ियादा हो तो ऐसे लोगों पर कुर्बानी वाजिब है।

प्रश्नः कुर्बानी करने के बजाए, कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का कर दी जाए तो क्या कुर्बानी अदा हो जाएगी?

उत्तरः कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करने से कुर्बानी अदा न होगी जिन लोगों पर कुर्बानी वाजिब है उनके लिए जरूरी होगा कि कुर्बानी के दिनों में जानवर कुर्बान करें, अलबत्ता अगर कुर्बानी के दिनों में किसी वजह से कुर्बानी न कर सके तो अब कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करना वाजिब होगा।

(फतावा हिन्दीयाः5/294)

प्रश्नः किसी साहिबे निसाब ने कुर्बानी का जानवर खरीदा मगर कुर्बानी के दिनों में किसी वजह से कुर्बानी न कर सका तो अब क्या करे?

उत्तरः उस जानवर को सद्का कर दे बेहतर होगा कि जिस मदरसे में मुसलमान गरीब बच्चों को खाना दिया जाता है वह जानवर उस मदरसे वालों को दे दें वह उसे ज़ब्ह करके गरीब बच्चों को खिला दें।

प्रश्नः जो शख्स साहिबे निसाब नहीं है अगर वह कुर्बानी का जानवर खरीद ले तो क्या उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी?

उत्तरः अगर कोई गरीब मुसलमान कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी की नीयत से, कुर्बानी का जानवर खरीदे तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी लेकिन अगर कुर्बानी के दिनों से पहले जानवर खरीदा था तो उस पर कुर्बानी वाजिब न होगी।

(रद्दुलमुहतारः 6/321)

प्रश्नः किन जानवरों की कुर्बानी जाइज है?

उत्तरः बकरा, बकरी, भेड़ (नर व मादा), दुंबा (नर व मादा), गाय (नर व मादा), भैंस, भैंसा, पड़वा, ऊँट, ऊँटनी की कुर्बानी जाइज है। हमारे यहां गाय का ज़ब्ह करना कानूनन मना है, इसलिए यहां गाय की कुर्बानी नहीं की जाती, मुसलमानों को चाहिए कि यहां गाय की कुर्बानी करने का इरादा न करें ताकि मुसलमान कठिनाइयों में न पड़ें।

प्रश्नः कुर्बानी के जानवरों

की उम्र क्या होनी चाहिए?

उत्तर: ऊँट और ऊँटनी की उम्र कुर्बानी के वक्त पाँच साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, भैंस या भैंसा की उम्र कुर्बानी के वक़्त दो साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, बकरी, बकरा, भेंड़ (नर व मादा), दुंबा (नर व मादा) की उम्र कुर्बानी के वक़्त एक साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, दुंबा और भेड़ अगर खूब सिहतमन्द और मोटे हों देखने में एक साल के लगें तो एक साल से कम (6 माह) के भी कुर्बानी में ज़ब्ह किये जा सकते हैं लेकिन एहतियात इसी में है कि वह भी एक साल से कम के न हों।

प्रश्न: जो जानवर बाजार से खरीदे जाते हैं उनकी सही उम्र नहीं मालूम हो पाती ऐसे में क्या करना चाहिए?

उत्तर: कुर्बानी का जानवर खरीदते वक़्त यह देख लेना चाहिए कि जानवर दाँता है या नहीं अगर दाँता नहीं है तो कुर्बानी के लिए ठीक नहीं, दाँत तो कम उम्र वाले जानवर के भी होते हैं, दाँतने से मुराद है आगे के दाँतों में दूध के दाँतों की जगह दो बड़े दाँत निकल आये हों, दाँतना हर आदमी नहीं पहचानता इसलिए जानकार से दिखवा लेना चाहिए।

प्रश्न: किन जानवरों की कुर्बानी में एक से ज़ियादा लोग शरीक हो सकते हैं?

उत्तर: ऊँट, ऊँटनी, भैंस, भैंसा, पड़वे में एक से ज़ियादा सात तक लोग शरीक हो कर कुर्बानी कर सकते हैं। अगर एक बड़े जानवर में एक से ज़ियादा लोग शरीक हों तो किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो।

प्रश्न: कुर्बानी का जानवर कैसा होना चाहिए?

उत्तर: अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी का जानवर अच्छा और तैयार होना चाहिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अंधे, काने, लंगड़े, और दुम कटे जानवर की कुर्बानी न करें।

लंगड़े का मतलब यह है कि वह तीन पांव से चलता हो, एक पांव ज़मीन पर रखा नहीं जाता, अगर रखता भी है तो उससे चलता नहीं, तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं है। (फतावा आलम गीरी)

जिन जानवरों के कान या दाँत बिल्कुल न हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं। अलबत्ता अगर दो चार दाँत न हों या एक कान एक तिहाई से कम कट गया हो तो उस की कुर्बानी दुरुस्त है। जिस जानवर की सींग जड़ से टूट गयी हो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर थोड़ी सी टूटी है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है, जिस जानवर की पैदाइशी सींग नहीं हैं उस की कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्न: दुबले जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: दुबले जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है लेकिन अगर इतना दुबला है कि उसके बदन पर गोश्त ही नहीं है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

प्रश्न: कुर्बानी का जानवर खरीदने के बाद कोई ऐब पैदा हो जाये तो क्या करें?

उत्तर: कुर्बानी का जानवर खरीदने के बाद अगर उसमें ऐसा ऐब पैदा हो जाये जिसकी

वजह से कुर्बानी दुरुस्त नहीं तो अगर वह गरीब है तो उसी जानवर की कुर्बानी कर दे और अगर अमीर है तो दूसरा बे ऐब जानवर खरीद कर कुर्बानी करे।

प्रश्नः गाभिन जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः गाभिन जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है और अगर उसके पेट का बच्चा जिन्दा निकल आये तो उसको भी ज़ब्ह कर दे लेकिन गाभिन जानवर की कुर्बानी न करना ही बेहतर है।

प्रश्नः कुर्बानी की खाल का क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्बानी की खाल अपने काम में ला सकते हैं जैसे जा नमाज़ बना लें तकिया बना लें, झोला बना लें वगैरा, कुर्बानी की खाल किसी को हदीया भी कर सकते हैं लेकिन कुर्बानी की खाल अगर बेची गई तो उसकी कीमत नादार मुसलमान का हक है कुछ मदरसे वाले उस कीमत से मुदर्रिसीन की तनख्वाहों या मदरसे की इमारत बनाने में खर्च करते हैं जो जाइज नहीं है उनको चाहिए कि कुर्बानी की खाल की कीमत ग़रीब तलबा पर खर्च करें। कुर्बानी की खाल की कीमत मस्जिद बनाने में भी खर्च करना जाइज नहीं है।

प्रश्नः क्या कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को दिया जा सकता है?

उत्तरः कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को भी दिया जा सकता है मगर इसका ख़्याल रहे कि एक तिहाई गोश्त गरीब मुसलमानों को पहुंचाने और एक तिहाई गोश्त अज़ीजों को देना और एक तिहाई अपने घर वालों पर खर्च करना बेहतर है, अगर बड़ा खानदान है और खुद पूरा गोश्त घर वाले खा लें, तक्सीम न कर सकें तो कोई गुनाह भी नहीं।

❖❖❖

बातिल से दबने वाले ऐ आसमाँ नहीं हम
सौ बार कर चुका है तू इम्तिहाँ हमारा

अल्लामा इक़बाल रह0

दिवस स्वतंत्रता आओ मनाए

दिवस स्वतंत्रता आओ मनाएं
गीत प्रेम के मिल कर गाएं
ले के तिरंगा हम लहराएं
देश तिलंगा सब को बनाएं
देश हमारा ज़िन्दा बाद
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
आपस में सब भाई भाई
आओ गाएं रब की बड़ाई
कभी न हो याँ धर्म लड़ाई
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
हर कोई यां शिक्षित होगा
शांति ज्ञान का पंडित होगा
पाप यहां पर खण्डित होगा
अत्याचारी दण्डित होगा
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
भ्रष्टाचार मिटाएं हम सब
आतंकवाद मिटाएं हम सब
छूत छात मिटाएं हम सब
भेद भाव मिटाएं हम सब
भारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद
मेहनत करना सबको सिखाएं
जन सेवा का पाठ पढ़ाएं
सत्य ज्ञान को खूब बढ़ाएं
सत्य मार्ग हम सब को दिखाएं
भाारत प्यारा ज़िन्दा बाद
देश हमारा ज़िन्दा बाद

मुआ़शरती बुराईयाँ और उन का हल

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुआ़शरती बुराईयाँ नाम हैं अक़्ल व इरादा की कमी का, जब इंसान में अक़्ल व इरादा कमज़ोर पड़ता है तो बुराई की तरफ़ माइल होता है जिससे मुआ़शरा तबाह होता है और इंसानी अफ़राद व इज्तिमा को रूहानी और माद्दी नुक़्सान पहुँचता है बल्कि यह बुराईयाँ जब किसी क़ौम में आम हो जाती हैं तो कौम व मुल्क की हलाकत व बरबादी का सबब बनती हैं।

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबत—ए—हयात है, इसलिए कुर्आन ने जगह—जगह मुआ़शरती बुराईयों का बड़ी तफ़्सील से जिक्र किया है और साथ ही इसका इलाज भी तजवीज़ किया है चुनांचे इरशादे बारी तआ़ला हैः—

अनुवादः *अल्लाह इंसाफ़ और एहसान से काम करने और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देता है वह बेहयाई, नापसंदीदा बात और सरकशी से रोकता है, तुम्हें वह नसीहत करता है शायद कि तुम नसीहत पा जाओ।*

(सूरः नहल—90)

इस आयते करीमा में मुआ़शरती बुराईयों को तीन बड़े उनवानों में तक़्सीम किया गया है जो यह हैं—

1. फहशा यानी बेहयाई के काम। 2. मुंकरात जिससे पूरी जमाअत की ज़िन्दगी मुतअस्सिर हो। 3. और बागी या सरकशी, जैसे चोरी, क़त्ल, डाका और मुल्क व क़ौम से गद्दारी के काम।

यह वह अख़्लाकी बुराईयाँ हैं जिन को हर मजहब और हर इंसानी मुआ़शरत ने यकसां तौर पर बुरा कहा है, वह दर हक़ीक़त बुराई और बेहयाई के काम हैं और दीन व शराफत की निगाह में वह सब बुराईयां गुनाह और नापंसदीदा बातें हैं, अगर उनको जाइज़ क़रार दे दिया जाए तो अफ़राद के बाहमी हुक़ूक़ से अमान उठ जाए और किसी की जान व माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सलामत न रहे।

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

कुर्आन मजीद ने इस ज़िम्न में अख़्लाक़ का मोतदिल निज़ाम पेश किया, वह अख़्लाक़ जो ख़ुदा को पसंद हैं फज़ाइल कहलाते हैं और जिन को ख़ुदा नापसंद करता है उनको रज़ाइल कहते हैं, कुर्आन मजीद ने जिन फज़ाइले अख़्लाक़ का ज़िक्र किया है वह यह हैं—

तक्वाः—

"तक्वा यानी इफ़्फ़त पाकीज़गी, अदल व इंसाफ़, अफ़्व व दर गुज़र, तवाज़ो व इंकिसारी एतिदाल व मियाना रवी, हक़गोई, एहसान और सिला रहमी"।

इन फजाइल के न होने से जो मुआ़शरती खराबियाँ पैदा होती हैं वह यह हैं—

हिर्स व तमा, बे हयाई, फुजूल ख़र्ची, झूठ, रिश्वत, क़िमार बाज़ी, नाप तौल में कमी, बदी गीबत, यह वह मुआ़शरती बुराईयाँ हैं

जिन को कुर्आन ने इन मुआ़शरती बुराईयों को फहशा और मुंकरात से ताबीर किया है, कुर्आन मजीद ने इन मुआ़शरती बुराईयों का जो इलाज तजवीज़ किया है वह यह है कि–

अनुवादः–*बेशक नमाज़ बेहयाई और बुराई की बातों से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी चीज़ है।*

शर्म व हयाः–

बेहयाई का इलाज शर्म व हया है, बे हयाई की बातों से बचना लेकिन हक़ बात के इज़हार में शर्म व हया दामनगीर न होना, यही मुआ़शरती बुराईयों का कुर्आनी इलाज है, हया नाम है फवाहिश व मुंकरात से बचने का, जज़्बए हया जो इंसानों को मुआ़शरती बुराईयों से रोकता है अगर यह न हो तो फिर इंसान बे हया हो कर जो चाहे कर सकता है, हया से भलाई फैलती है, नमाज़, हया का सर चश्मा है और वही बुराईयों से बचाती है।

अदल व इंसाफः–

इसी तरह जिन्दगी के हर शोबे में अदल व इंसाफ से काम लेने की भी ज़रूरत है जब अक़्ल की कूवत और नेकी का चिराग़, जज़्बात की आंधियोंमें बुझ रहा हो तो उस वक़्त अदल व इंसाफ का सहारा लेना पड़ता है, बाज़ बुराईयां वह हैं जिन के करने से खुदा की रहमत छिन जाती है फिर वह बुराईयाँ हैं जो ख़ुदा की मुहब्बत से महरूम कर देती है, फिर वह हैं जो रिजाए इलाही से खाली हैं मसलन शिर्क, एक ऐसी मुआ़शरती ख़राबी है कि जिस का मुरतकिब रिजाए इलाही को नहीं पा सकता, बल्कि खुदा शिर्क को मुआ़फ नहीं करता, शिर्क करने वाला खुदा की रहमत से हमेशा के लिए महरूम हो जाता है, इसलिए इस्लाम का कारनामा यह है कि इसने दुन्या के माबूदों से तमाम बातिल माबूदों को बाहर निकाल फेंका, बातिल माबूदों की इबादत और परस्तिश यक क़लम मौकूफ कर दी, और एक खुदा की इबादत का एलान किया।

दर गुज़रः–

कुर्आन मजीद ने दूसरा इलाज जो मुआ़शरती बुराईयों को दूर करने के लिए तजवीज़ किया है वह यह हैं।

यानी बुराई और भलाई बराबर नहीं, अगर कोई बुराई करे तो इसका जवाब अच्छाई से दो, क्यों कि जाहिलों से दरगुजर करना और एहसान करना नेकी है, अल्लाह एहसान के बदले को बेकार नहीं करता, हर नेकी सवाब का काम है, एहसान करने और मुंसिफाना बरताव से बुराईयाँ दूर होती हैं, और नेकी के अमल से, मुआशरती बुराईयों का ख़ातिमा होता है, इसलिए अ़फ़्व व दर गुज़र से काम लेना चाहिए, नेकी बदी को धो देती है, भलाई करना एक ऐसी सिफत है जो हर नेकी को अपने अंदर समेटे हुए है, भलाई करना बहुत सी बुराईयों का इलाज है, बुराई की जगह, भलाई करना, मुआ़शरती ख़राबियों का सब

से बड़ा इलाज है, इसीजिए कुर्आन मजीद ने कहा हैः

अनुवादः—*बेशक नेकियाँ बुराई को दूर कर देती हैं।*

(सूरः हूद—14)

नेकियों को इख़्तियार करने और ज़िन्दगी को अच्छे आमाल से मुज़ैय्यन करने की मिसाल कुर्आन मजीद ने रहमान के बन्दों के उनवान से इस तरह दी है—

अनुवादः—*और ख़ुदा के बन्दें तो वह हैं जो ज़मीन पर आहिसतगी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) गुफ़्तगू करते हैं तो सलाम कहते हैं और जो अपने परवरगिगार के आगे सज्दा करके और (आजिज़ी व अदब से) खड़े रह कर रातें बसर करते हैं और वह जो दुआ माँगते हैं कि ऐ परवरदिगार दोज़ख के अज़ाब को हम से दूर रख कि इस का अज़ाब बड़ी तक्लीफ़ की चीज़ है और दोज़ख़ ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है और वह जब खर्च करते हैं तो न बेजा उड़ाते हैं और न वह तंगी को काम में लाते हैं बल्कि एतिदाल के साथ, ज़रूरत से ज़ियादा न कम और वह जो ख़ुदा के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते और जिस जानदार का मार डालना ख़ुदा ने हराम किया है उसको क़त्ल नहीं करते मगर जाइज़ तरीक़े पर (यानी हुक्मे शरीअत के मुताबिक) और बदकारी नहीं करते और जो यह काम करेगा सख़्त गुनाह में मुब्तला होगा।*

(सूरः अलफुरकानः 63—68)

इसके एलावा मुआशरती खराबियाँ जिन चीज़ों से दूर हो सकती हैं कुर्आन मजीद ने उन की तफ़्सील बताई है और वह यह हैंः—

1. तक़्वा, 2. इख़्लास, 3. तवक्कुल, 4. सब्र व शुक्र।

तक़्वा नाम है दिल की पाकीज़गी और नेक अमल का, इख़्लास नाम है दियानतदारी का, तवक्कुल ख़ुदा पर भरोसा करने को कहते हैं, और सब्र तमाम शैतानी ताक़तों पर क़ाबू पाने को कहते हैं, तक़्वा से अ़ज़मते नफ़्स पैदा होती है, और इंसान का ज़मीर बेदार होता है इसी लिए इस्लाम में बरतरी का मेयार तक़्वा को क़रार दिया गया है, इख़्लास ख़ुदा की ख़ुशनूदी और बजा आवरी को कहते हैं, जाहिर है अगर इंसान में परहेज़गारी और ज़िन्दगी में खुलूस पैदा हो जाए तो पूरा समाज मुआशरती बुराईयों से पाक हो सकता है क्योंकि जिस में अल्लाह का ख़ौफ होगा वह न बद दियानती करेगा और न किसी की हक़ तलफी करेगा, न उसके कौल व अमल में तज़ाद होगा और न वह अपने फराइज़े मंसबी को अदा करने में टाल मटोल करेगा। इसी तरह तवक्कुल और सब्र, कामयाबी की अस्ल बुन्याद हैं, मुश्किलात और मुसीबतों को बर्दाश्त करना, मसाइब का पामर्दी से मुक़ाबला करना ज़ब्ते नफ़्स से काम लेना, किसी कौम और मुल्क की तरक़्क़ी का ज़ीना है।

❖❖❖

प्रेम संदेशा

"सच्चा राही" आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

पारिवारिक व्यवस्था टूटने तथा बिखरने की आशंका से दो चार

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

—हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

अल्लाह तआला ने इंसान को बेहतरीन तख़्लीक़ी ढ़ाँचे से नवाज़ा और उसको शराफत व करामत का ताज पहनाया है अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इंसान की तौक़ीर व तकरीम का उच्च कमाल ये है कि उसे फरिश्तों से सज्दा कराया गया और शैतान को सिर्फ इसीलिए आलमे बाला से उतार फेंका गया कि उसने इंसान को हक़ीर समझ कर सज्दा करने से इन्कार कर दिया और अल्लाह के हुक्म से सरताबी इख़्तियार की, अल्लाह ने बनी नौअ़ इन्सान पर ये एहसान भी किया है कि उसको कूवते तसख़ीर से नवाज़ा है वह समन्दर की तहों को टटोल रहा है वह हद्दे नज़र से दूर सय्यारों पर अपनी कमन्दें फेंक रहा है। वह हवा के दोश और समन्दर के मुतलातिम मौज़ों की पुश्त पर सवार हो कर हज़ारों मील का सफ़र तै करता है और सुबह जब तुलूअ़ होती है तो कायनात की छुपी हुई हक़ीक़तों के इन्कशाफ़ात और नये नये आलात के ईजादात में इन्सान की फ़तेह मन्दी का पैगाम सुनाती है लेकिन जहां उसकी अक़्लो दानिश की सहर तराज़ियों के आगे कायनात दम बख़ुद है, वहीं ये भी एक हक़ीकत है कि वह जिस्मानी ऐतिबार से बेहद कमज़ोर, मुहताज व ज़रूरत मंद है, दुन्या में जितने जानदार हैं वह ब मुक़ाबला नौ मौलूद इंसान के जल्द अपने पाँव पर खड़े हो जाते हैं बाज़ जानवर चंद घण्टों में चलने फिरने लगते हैं और अपनी ग़िजाई ज़रूरत ख़ुद पूरी कर लेते हैं, बाज़ चन्द दिनों में और बाज़ चंद महीनों में लेकिन इंसान को सिर्फ आँख खोलने में कई घण्टे लग जाते हैं महीनों में वह बोलना शुरु करता है और सालों में चलना फिरना। जवानी की मंजिल को पहुंचने में उसे पन्द्रह सोलह साल लग जाते हैं फिर शुऊर की पुख़्तगी, जज़्बात में एअ़तिदाल फिक्र में गहराई के लिए भी सालहा साल मतलूब होते हैं इसलिए वह तवील अरसे तक अपने वालिदैन का और बुज़ुर्गों और दोस्तों का, असातिज़ह और मुरब्बियों का बेहतर मशवरा देने वाले और बही ख़्वाही का जज़्बा रखने वाले रहनुमाओं का मुहताज होता है।

इसीलिए इन्सान को सबसे ज़ियादा ख़ानदान की जरूरत पड़ती है अगर माँ—बाप का साया उसके सर से उठ जाये तो वह एक ख़िजाँ रसीदह दरख़्त की तरह अपने आप को बे साया और बे सहारा महसूस करता है। अगर वह भाई बहन से महरूम है तब भी उसे अपनी तन्हाई का एहसास होता है अगर कुछ और बुजुर्ग रिश्तेदार, दादा, दादी, नाना, नानी न हों तो वह ग़ैर मामूली कमी महसूस करता

है, अगर चचा, फूफी, मामू और ख़ाला से महरूम हो तो उसे लगता है कि जैसे उसके इर्द गिर्द अपने ख़ानदान का हिफ़ाज़ती हिसार मौजूद नहीं है फिर जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखने के बाद जब तक शरीके हयात का साथ हासिल न हो जाए उसकी ज़िन्दगी बे सुकून और ना आसूदह होती है, अब खुद उसके घर में फूल खिलते हैं और वह साहिबे औलाद होता है तो उससे ग़ैर मामूली नफसियाती मसर्रत उसे हासिल होती है और बेटों और बेटियों के बग़ैर उसे अपनी तमाम तर कोशिशें बे माना और बे मक़सद नज़र आती हैं फिर सुसराली ख़ानदान के ज़रिए वह अपने आपमें मज़ीद तवानाई महसूस करता है ग़र्ज़ कि इन्सान की फितरत चाहती है कि वह एक ख़ानदान का हिस्सा बन कर रहे।

ख़ानदान का एक फायदा तो ये है कि वह उसके लिए हिफाज़ती हिसार होता है अगर कोई शख़्स उस पर ज़ियादती करे तो इन्सान ये समझ कर अपना दिफाअ़ करता है कि उसकी पुश्त पर उसका पूरा खानदान है और ख़ुद ज़ियादती करने वाले को भी ये ख़्याल होता है कि हमे तन्हा एक शख़्स का नहीं बल्कि पूरे ख़ानदान का मुकाबला करना होगा, इसी लिए शरीअ़त ने क़त्ल का अर्थदण्ड, क़ातिल के क़रीब तरीन रिश्तेदारों के ज़िम्मे रखा है ताकि एक तरफ क़ातिल पर वाजिब होने वाली इस बड़ी माली सज़ा को रिश्तेदारों पर तक़सीम कर दिया जाए और वह उसके लिए क़ाबिले बरदाश्त हो सके दूसरी तरफ़ जो करीबी रिशतेदार हैं वह भी महसूस करें कि अपने खानदान के एक फर्द को जुर्म से बाज़ रखने के लिए सभी ज़िम्मेदार हैं वरना जुर्माने में हमें भी शरीक होना पड़ेगा। इस्लाम से पहले अरबों में ये ख़ानदानी निज़ाम ही था, जिसके ज़रिए लोगों का तहफ़्फ़ुज़ होता था और आज भी क़बाइली इलाकों में यही निज़ाम लोगों की जान व माल का मुहाफ़िज़ है।

ख़ानदान का दूसरा बड़ा फायदा ये है कि उससे कमज़ोरों, ग़रीबों, मअ़जूरों, बूढ़ों, यतीमों बेवाओं और ख़्वातीन की किफालत का नज़्म हो जाता है क्योंकि हर शख़्स अपने ख़ानदान के मजबूर व नादार लोगों की ज़रूरियात पूरी करने का ज़िम्मेदार समझा जाता है, वालिदैन को औलाद की और औलाद को वालिदैन की शौहर व बीवी, भाइयों बहनों की एक दूसरे को इसी तरह ख़ानदान के नादार और बे सहारा लोगों की ख़ानदान के खुशहाल लोगों को ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है। इस्लाम में नफ़क़ा किफ़ालत और मीरास के पूरे क़ानून की असास यही है कि इन्सान पर सिर्फ उसी की ज़िम्मेदारी नहीं है बल्कि वह ख़ानदान का एक हिस्सा है वह एक कुल का भाग और एक इमारत की ईंट है उसके लिए दुरुस्त नहीं है कि वह

दूसरों से बे तअ़ल्लुक़ हो जाए।

ख़ानदान का तीसरा अहम मक़सद ख़ुशी व मसर्रत को दो बाला करना और दुख दर्द को तक़सीम करना और हल्का करना है जितनी भी ख़ुशी की बात हो जाए अगर इस ख़ुशी में माँ–बाप की शिरकत न हो तो ख़ुशी अधूरी न तमाम और बे कैफ मालूम होती है इसी तरह अगर इन्सान पर कोई मुसीबत आये उसके दर्द पर आँसू बहाने वाली कोई आँख न हो उसके ग़म को बांटने वाला कोई दिल न हो और उसकी तसल्ली व दिलदारी करने वाली कोई ज़ुबान न हो तो राई बराबर मुसीबत पहाड़ मालूम होती है ये इन्सानी फितरत है और इन्सान की नफ़सियात का लाज़मी हिस्सा है ख़ानदान की शिरकत ख़ुशी को दो बाला और ग़म के एहसास को हल्का करती है।

इसी लिए कुर्आन मजीद ने खानदान के वजूद को अल्लाह तआ़ला के एहसास में शुमार किया है बुन्यादी तौर पर इन्सान तीन ख़ानदान के दरमियान होता है। ददिहाल और ननिहाल माँ–बाप की तरफ़ से और ससुराल शौहर व बीवी की तरफ़ से कुर्आन ने पहले दोनों ख़ानदानों को ''नसब'' के लफ़्ज़ से तअ़वीर किया है, और तीसरे ख़ानदान को ''सेहर'' के लफ़्ज़ से बयान किया गया है।

इसलिए इस में कोई शुबह नहीं कि ख़ानदानी निज़ाम इन्सानी समाज के लिए अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेअ़मत है इसमें इन्सान का तहफ़्फ़ुज़ है उसकी किफ़ालत का इंतिज़ाम है और उसमें क़ल्बी और रूहीना सुकून का सामान है। लेकिन इस्लाम का क़ानूने मीरास और क़ानूने नफ़्क़ा इस बात को वाज़ेह करता है कि ख़ानदानी निज़ाम में इतना फैलाव भी न होना चाहिए कि इन्सान के लिए अपनी ज़िम्मेदारियों से बरी होना मुश्किल हो जाए और हर इन्सान के अन्दर ख़लवत पसन्दी और दूसरों की मुदाख़लत से तहफ़्फ़ुज़ का जो जज़्बा रखा गया है वह भी मजरूह हो जाए क्योंकि अगर ख़ानदान की वुसअ़त ग़ैर महदूद हो जाए तो इन्सान घर में रहते हुए अपने आपको बाज़ार में महसूस करता है और मिज़ाज बहाल रहता है वरना कुछ बच्चे अपने वालिदैन को मजबूर कर देते हैं कि वह बूढ़ों के हॉस्टल में रहें और उनके बच्चे साल में एक दफा आ कर उन्हें गुलदस्ता पेश कर दें और बस ये ऐसी ज़िन्दगी है जिसमें इन्सान को मौत ज़िन्दगी से बेहतर मालूम होती है।

दूसरा नुक़सान औरतों का हुआ औरतों की सेहत में फितरी तौर पर जल्द इन्हितात पैदा होता है, विलादत और फितरी अ़वारिज़ तेज़ी से उनकी सेहत को मुतअस्सिर कर देते हैं और उम्र गुज़रने के साथ साथ न सिर्फ उनकी ख़ूबसूरती को गहन लगने लगता है बल्कि उनकी क़ूवते अमल

भी तेज़ी से मुतअस्सिर होने लगती है अब जिस मुआ़शरे में औरत सिर्फ मर्द के लिए हवस का सामान हो उसमें एक ऐसी औरत की क्या क़ीमत हो सकती है जिसका हुस्नो जमाल ढ़ल चुका हो इसीलिए मग़रिबी समाज में औरतें अपने आप को बहुत परेशान महसूस करती हैं और ग़ालिबन इसी बाइस मग़रिबी ममालिक में ख़वातीन ब मुक़ाबला मर्दों के ज़ियादा इस्लाम कुबूल करने पर माइल हैं।

तीसरे इस सबसे बच्चे मुतअस्सिर होते हैं जब ज़िन्दगी में एक दूसरे से जोड़ न हो, ज़िन्दगी का मक़सद सिर्फ ऐश व इशरत हो तो वहां इन्सान के दाद ऐश देने में जो चीज़ भी रुकावट बनती है वह बोझ बन जाती है, बच्चे इस आज़ादी में ख़लल अंदाज़ होते हैं वह माँओं के लिए मुलाज़िमत में रुकावट बनते हैं और शौहर व बीवी के दरमियान तअ़ल्लुकात में बे वफाई की वजह से ये अन्देशा भी दामनगीर होता है कि अगर हमारे रास्ते अलग हो गये तो उन बच्चों का बोझ कौन उठाएगा? इसलिए मग़रिबी समाज औलाद से राहे फरार इख़्तियार कर रहा है और जो बच्चे पैदा हो जाते हैं उन्हें देख भाल के लिए परवरिश गाहों के हवाले कर दिया जाता है, बाप की शफक़त और माँ की ममता उन्हें हफ़्ते में एक दो दिन ही मिल पाती है। इस तरह बच्चों पर ग़ैर मामूली नफ़िसयाती असर पड़ता है।

एक बड़ा नुक़सान इसका ये है कि अपनी शनाख़्त से महरूमी है अल्लाह तआला ने इन्सान की फितरत में ये बात रखी है कि वह अपनी पहचान को महफूज़ रखना चाहता है और वह चाहता है कि उसके शहर की उसके घर की उसके कारोबार की और उसकी अपनी पहचान हो सबसे ज़ियादा उसको जो शनाख़्त अज़ीज़ होती है, वह फितरी शनाख़्त है, यानी माँ–बाप और खानदान से निस्बत को अपने लिए बाइसे इज़्ज़त समझता है। जो लोग अपनी शनाख़्त से महरूम होते हैं, उन्हें ये महरूमी सताती है, वह नफ़सियाती मरीज़ हो जाते हैं, यहां तक कि मुजरिमाना हरकतों में मुबतला हो जाते हैं ख़ानदानी निज़ाम के बिखराव की वजह से निकाह से गुरेज़ ज़िना की कसरत और अपनी शनाख़्त से महरूम बच्चों की पैदाइश मग़रिबी मुल्कों में ऐसे मुजरिमों को पैदा कर रही हैं।

इन्सान को जो चीज़ सबसे ज़ियादा महबूब है वह है दिल का सुकून, ये सुकून या तो इन्सान को तअल्लुक़ मअ़ल्लाह से हुआ है या एक इन्सान को दूसरे इन्सान से बच्चों को अपने माँ–बाप की गोद में जा कर जो सुकून मिलता है उसकी किसी बड़ी से बड़ी नेअ़मत से तशबीह नही दी जा सकती, नौजवान औलाद बूढ़े माँ–बाप के सर में तेल लगाएं

और पाँव दबाएं उससे वालिदैन को जो ख़ुशी होती है और क़ल्ब व रूह को जो तस्कीन हासिल होती है वह सोने चांदी के पलंग पर सुलाने से भी हासिल नहीं हो सकती। शौहर बीवी जैसे एक दूसरे के सुकून का ज़रिअ़ा हैं कोई चीज़ उसका मुतबादिल नहीं बन सकती भाई बहन को एक दूसरे की महब्बत से जो ख़ुशी का एहसास होता है तो रिशतों के आबग़ीने टूट जाते हैं। जैसे बिजली से महरूम बल्ब से रौशनी हासिल नहीं की जा सकती उसी तरह इन बे रूह रिशतों से इन्सान को सुकून की ग़िज़ा हासिल नहीं हो पाती, यही वजह है कि मग़रिब और मग़रिब ज़दह मुआ़शरे में बे ख़्वाबी, डिप्रेशन और ख़ुदकशी के वाक़िआ़त तेज़ी से बढ़ते जा रहे हैं। इसलिए इसमें कोई शुब्हा नहीं कि ख़ानदानी निज़ाम का बका इन्सान के लिए बहुत बड़ी नेअ़मत है उसका बिखर जाना बहुत बड़ी आज़माइश है।

ग्लोबलाईजेशन की बुन्याद पर सिर्फ मग़रिब के तिजारती सामान ही का मश्रिक़ी मुल्कों में एक्सपोर्ट नहीं हो रहा है बल्कि मग़रिबी अफ़्कार मग़रिबी तहज़ीब और मग़रिब का तर्ज़ ज़िन्दगी भी हमारे समाज के दरवाज़ों पर दस्तक दे रहा है नवजवान लड़कों और खास कर लड़कियों ने खानदान से बे तअ़ल्लुक़ हो कर ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने का मिज़ाज पैदा हो रहा है कि जिसमें उन्हें न अपने बड़ों की ख़िदमत करनी पड़े और न उनका हुक्म मानना पड़े, माँ–बाप जिनके क़दमों के नीचे जन्नत रखी गई है। और जिनको जन्नत का दरवाज़ा कहा गया है, वह औलाद के लिए बोझ बनते जा रहे हैं, खानदान के बुज़ुर्गों के तजुरबात पर मबनी मशवरों को दख़ल दर मअ़कूलात तसव्वुर किया जा रहा है, रिशत–ए–निकाह में वफ़ादारी के बंधन कमज़ोर होते जा रहे हैं। औलाद से फरार का जज़्बा परवान चढ़ रहा है, ख़ानदान के मजबूर लोगों की किफ़ालत और उनकी ख़िदमत की ज़िम्मेदारी लोग अपने आप पर महसूस नहीं करते गरज़ कि हमारा ख़ानदानी निज़ाम भी शिकस्त व रेख़्त के ख़तरे से दो चार है इन हालात में निहायत ज़रूरी है कि हम अपने ख़ानदानी निज़ाम को बचाने की कोशिश करें और अपने समाज को मग़रिब के उस सैलाब में न बह जाने दें जिसने ख़ानदान के तसव्वुर को एक फरसूदह रिवायत क़रार दे दिया है और चाहता है कि जैसे वह ख़ुद खानदान के बिख़राव की आग में जल रहा है मश्रिक़ी समाज भी उसी सूरते हाल को कबूल कर ले।

❖❖❖

बड़ों का अदब

—मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत दातागंज बख़्श के आध्यात्मिक गुरु गज़नी में रहते थे। ये भी अपने पीर की सेवा में दिन रात लगे रहते। एक दिन पीर साहब ने कहा, अली लाहौर चले जाओ। हज़रत दातागंज बख़्श का असली नाम अली हिज्यरी था।

दातागंज को बड़ा आश्चर्य हुआ ये क्या, अभी तो सब ठीक—ठाक था, ये अचानक लाहौर जाने का आदेश क्यों? बड़े अदब और काँपते होठों से कहा हज़रत लाहौर में तो आपके खलीफ़ा (प्रतिनिधि) मौजूद हैं, मैं वहां क्या करूँगा। पीर साहब ने आँखें तरेरी और कहा, अली हुक्म की तामील करते हैं बहस नहीं। दातागंज बख़्श अपने इस कृत्य पर बड़े लज्जित हुए और गुस्ताख़ी की माफी चाही और उल्टे पाँव अपने गुरू की खानकाह से बाहर आ गये। हालांकि दातागंज अपने पीर से बिछड़ना नहीं चाहते थे, इसलिए प्रेम भावना में बह कर पूछ लिया था।

दातागंज बख़्श लाहौर की ओर निकल पड़े। यात्रा सामग्री हेतु कुछ समय गंवाना भी अपने गुरू के आदेश की अवमानना समझा। रास्ते की झंझावतों से लड़ते हुए महीनों की यात्रा चन्द दिनों में पूरी की। विचित्र संयोग की जब धूल धक्कड़ में लिपटे हुए लाहौर पहुंचे तो देखा एक आदमी का जनाज़ा जा रहा है। लोगों से पूछा, भाई ये किसकी मय्यत है, जवाब मिला उसी बुजुर्ग की जो आपके पीर साहब की ओर से पंजाब के इलाके में इस्लाम के प्रचार प्रसार हेतु नियुक्त थे।

सचमुच अल्लाह वालों की हर बातें निराली होती हैं। ये बातें आम आदमी की समझ के बाहर है। जब बड़े बुजुर्गों की जूतियाँ सीधी की जायेंगी तो बात समझ आयेगी। बहुत सी चीज़ें इश्क़ से जुड़ी होती हैं। अक़्ल वहां काम नहीं देती। अल्लामा इक़्बाल रह0 कहा करते थे कि:—

बेखतर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महव तमाशा-ए-लबे बाम अभी।

ख़ैर! बात दातागंज बख़्श की हो रही थी। पंजाब पहुंच कर उन्होंने ख़िलाफ़त की गद्दी संभाली और इस्लाम को घर—घर पहुंचाने के प्रयास में जुट गए। अपनी क्षमतानुसार अल्लाह के दीन का नूर चप्पे—चप्पे में फैला दिया। लेकिन वह जिसे दुन्या दातागंज बख़्श कहती है, पीरों का पीर कहती है, अज़ीम बुजुर्ग और महान संत कहती है वही आदमी पूरी ज़िन्दगी अपने पीर के समक्ष एक अन्जानी गलती पर लज्जित रहा, कहा करते थे कि मुझे हज़रत से नहीं पूछना चाहिए था कि मैं लाहौर जा कर क्या करूँगा।

वास्तव में आज नैतिकता को नये जीवन की आवश्यकता है जो आज बड़े बुजुर्ग का कहना मानने की प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। भौतिक्ता की अंधी दौड़ में बड़े बुजुर्गों के लिए कोई समय ही नहीं बचा हालांकि ये ही हमारी बुन्याद हैं।

इन्हीं से हमारी पहचान है और हमारी सभ्यता जुड़ी है।

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 कहते हैं कि "वह हम में से नहीं जो अपने छोटों पर दया न करे और अपने बड़ों का सम्मान न करें।"

मेरा मानना है कि आज नैतिकता वादी शिक्षा ने भी नैतिकता और शिष्टा का हनन किया है। आज हाल ये हो गया है कि यदि बेटा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर या टीचर बन जाता है तो माँ–बाप बड़े एहतियात से बात करते हैं कि कहीं बेटा नाराज़ न हो जाए। सचमुच ये एक ऐसी वास्तविकता है जिसका इन्कार बहुत कम लोग ही कर पाएंगे, लेकिन इन्हीं वास्तविक्ताओं में एक आशा की किरण आज भी रौशन है कि यदि बेटा मुफ़्ती, आलिम या हाफ़िज बनता है तो इस लिहाज़ से बात करता है कि कहीं माँ–बाप नाराज न हो जाएं।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें बड़ों की इज़्ज़त करने वाला बनाए।

आमीन

❖❖❖

मैं ताइब हूँ या रब तू कर दे मुआ़फ़

–इदारा

इलाही गुनाहों को कर दे मुआ़फ
इलाही ख़ताओं को कर दे मुआ़फ
ख़ताएं हुई हम को है ऐतिराफ
मैं ताइब हूँ या रब तू कर दे मुआ़फ
कोरोना से दुन्या परेशान है
हर इक फर्द दुन्या का हैरान है
इलाही कोरोना को अब ले उठा
कोरोना से बन्दों को अपने बचा
तेरे बन्दे हैं या रब ये करते दुआ़
हर वबा हर बला से तू हम को बचा

एक गीत

–इदारा

सोने रूपे के ये धारे
डूबे इन के लोभी सारे
बच कर रहना तुम हे प्यारे
दुन्या माया जाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
ईश-प्रेम से मन को भर लें
माता-पिता की सेवा कर लें
पीड़ित जनता के दुख हर लें
हो जायें ख़ुशहाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
सत्य धर्म यदि जनता पाये
देश शक्तिशाली बन जाये
जनता का दुख सब कट जाये
आये फिर न अकाल
हे प्यारे दुन्या माया जाल
ईश्वर की हम अनुमति पायें
सेवक बन कर राज चलायें
नित्य देश को स्वर्ग बनायें
हो कर माला माल
हे प्यारे दुन्या माया जाल

स्वतन्त्रता दिवस

—इदारा

आज 15 अगस्त है – यह स्वतन्त्रता दिवस है।
राष्ट्र ध्वज फहरायेंगे – राष्ट्रगान भी गायेंगे
लेकिन क्यों है ख़ुशी नहीं – पहली जैसी ख़ुशी नहीं
जयकारों की गूंज नहीं – ज़िन्दाबाद की धूम नहीं
सड़कों पर क्यों भीड़ नहीं – गलियों में क्यों खेल नहीं
प्रतियोगिता कोई नहीं – और मिठाई बटी नहीं
कहीं बधाई सुनी नहीं – मुबारकबाद भी चली नहीं
कोरोना ने है दुखीं किया – कोरोना ने सब छीन लिया
लाखों पीड़ित हो के रहे – और हज़ारों चले गये
दुख होना स्वाभाविक है – रंज होना स्वाभाविक है
लेकिन साहस छोड़े ना – हिन्दी हैं हम भूलें ना
मेल जोल से उठेंगे हम – और तरक़्क़ी करेंगे हम
ख़ुद हमारी मदद करे – ईश्वर अपनी कृपा करे
वैज्ञानिक सब लगे रहे – कोरोना की औषधि कोई मिले
टीका का अविष्कार हुआ – यह तो बड़ा उपकार हुआ
टीका हम अपनायेंगे – टीका हम लगवायेंगे
लेकिन मास्क न छोड़ेंगे – और न दूरी भूलेंगे
हाथ नहीं मिलायेंगे – गले नहीं लगायेंगे
ख़ूब सफाई करेंगे हम – हाथ धुलाई करेंगे हम
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद – हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद
बड़ों की ख़िदमत ज़िन्दाबाद – दादा दादी ज़िन्दाबाद
या रब हम को दे तौफ़ीक़ – बड़ों की खिदमत की तौफीक़

मधुमक्खियों के शरीर की रचना

—अबरार अहमद

मधुकोष से सटा हुआ आमाशय रहता है। ये एक दूसरे से छोटी सी सँकरी नली से जुड़े रहते हैं।

मधुकोष में रखे हुए रस को मधुमक्खियाँ जब चाटें तब उगल कर छत्ते के कोष्ठों में भर सकती हैं। आमाशय से निकल कर भोजन पहले छोटी आँत तथा फिर बड़ी आँत में जाता है। बड़ी आँत का अंतिम भाग गुदा है, जिसके द्वारा मल बाहर निकलता है।

पेट के ऊपरी भाग में हृदय रहता है। मधुमक्खी के शरीर के विभिन्न भागों में छोटे–छोटे छेद रहते हैं, जिनके द्वारा श्वांस भीतर जाती है। वायु पहले वायुकोषों में जाती है, फिर यह वायु जो कि रक्त शोधक ऑक्सीजन होती है, नन्हीं नन्हीं नालिकाओं से हो कर शरीर के प्रत्येक भाग में पहुंचती है।

मधुमक्खी के मस्तिष्क और स्नायु मण्डल भी होता है, जिससे वह देख और समझ सकती है और स्वाद, गंध, पीड़ा, हर्ष आदि का अनुभव कर सकती है।

अब हम रानी और नर की शरीर रचना को देखते हैं। रानी और श्रमिक मधुमक्खियों में कोई मौलिक अंतर नहीं होता। एक ही अण्डे से कुटुम्ब की इच्छा के अनुसार रानी या श्रमिक मधुमक्खी उत्पन्न हो सकती है। यदि नवजात ढोले को राजसी भोजन खिलाया जाए और बड़े कोष्ठ में रखा जाए तो उससे रानी मधुमक्खी उत्पन्न होती है, परन्तु यदि नवजात ढोले को साधारण भोजन दे कर छोटे कोष्ठ में रखा जाए तो श्रमिक मधुमक्खी उत्पन्न होती है।

रानी और श्रमिक मधुमक्खी में यह अंतर होता है कि रानी श्रमिकों से बड़ी होती है और उसके अण्डे उत्पन्न करने वाले अंग तथा अन्य जननेद्रियां भरपूर परिपक्व होती हैं, जब कि श्रमिकों में इन अंगों का विकास नहीं पाया जाता है।

नर देखने में श्रमिक और रानी से भिन्न आकार और रंग का होता है और उसमे वीर्य उत्पन्न करने वाले अवयव होते हैं। मैथुन में नर अपना वीर्य (शुक्राणु) रानी की योनि के अंतिम अंश में डाल देता है। यहां से शुक्रकीट, जो कि वीर्य में उपस्थित अति सूक्ष्म कण होता है, योनि को पार करके रानी के उन अंगों में जा पहुंचते हैं जिसे शुक्र पात्र कहते हैं। शुक्र कीट धागे के समान लंबे और पतले होते हैं।

जब रानी अण्डे देती है, तो प्रत्येक अण्डे के लिए वह थोड़े से शुक्र कीट निकाल देती है। इस प्रकार

अण्डे और शुक्र कीट का संयोग हो जाता है। इस प्रकार के अण्डे गर्भित अण्डे कहलाते हैं तथा इनसे श्रमिक या रानी उत्पन्न होती है।

इसके विरपीत जब रानी बिना शुक्र कीट संयोग के अण्डे देती है तो वे अनगर्भित अण्डे कहलाते हैं तथा इनसे नर उत्पन्न होते हैं।

❖❖❖

स्वतंत्रता दिवस.....

चमन और फुलवारी के समान है जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल होते हैं, फुलवारी की शोभा इसी भिन्नता में है। भारत एक विशाल देश है इसकी विशालता उसी समय तक स्थिर रह सकती है जब तक एक दूसरे का आदर सम्मान होगा और समानता होगी, ''फूट डालो और हुकूमत करो'' यह अंग्रेज़ों की नीति थी, हमें इससे दूर रहना चाहिए।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।

❖❖❖

कुर्बानी .....

जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को हटा कर दुम्बा लिटा दिया वही जब्ह हुआ हज़रत इब्राहीम ने जब आँख की पट्टी खोली तो दुम्बा जब्ह देखा और हज़रत इस्माईल अलग खड़े थे (वास्तविक बात अल्लाह अधिक जानता है) पवित्र कुर्आन में इस परीक्षा को बहुत बड़ी परीक्षा कहा गया है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी द्वारा हम को यह शिक्षा दी गई है कि यदि अल्लाह का आदेश हो तो उसके आज्ञा पालन की यह मांग है कि हम अपनी अत्यंत प्रिय वस्तु को भी अल्लाह की राह में कुर्बान करने से न हिचकिचाएं। पवित्र कुर्आन में है कि ''मुसलमानों तुम से जो जानवर की कुर्बानी कराई जाती है तो उस जानवर का खून और गोश्त अल्लाह को नहीं पहुंचता अपितु अल्लाह को तुम्हारे दिल का तक्वा पहुंचता है, अर्थात तुम को कुर्बानी का सवाब उस भावना पर मिलेगा जिस भावना से तुमने कुर्बानी की, यदि उस कुर्बानी से अल्लाह का आज्ञा पालन अभीष्ट होगा तो उसका प्रतिफल मिलेगा परन्तु यदि दिखावे के लिए कुर्बानी की गई होगी तो उसका बदला न मिलेगा।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुर्बानी के दिनों में धनवान मुसलमानों को कुर्बानी करने का आदेश दिया और उस का बड़ा महत्व बताया और बताया कि आज के दिन (कुर्बानी के दिन) सबसे जियादा सवाब का काम खून बहाना अर्थात कुर्बानी करना है और बताया ''कुर्बानी के एक एक बाल के बदले एक एक नेकी है''।

(मिश्कात)।

हर बुद्धिमान व्यस्क मुसलमान जो साहिबे निसाब हो उस पर कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी वाजिब है इसमें उसको कंजूसी न करना चाहिए और कुर्बानी करके खूब सवाब लेना चाहिए।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख _____

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखी उर्दू पढ़िये, जहां कठिनाई आए बाद में लिखी हिन्दी से मदद लीजिए

اللہ تعالیٰ نے جو مرض اتارا ہے اس کی دوا بھی اتاری ہے لیکن دوا کو انسانی عقل پر چھوڑ دیا۔ انسان نے مرض کی دوا کھوجنا شروع کی آخر کار کامیاب ہوا اور مرض کی دوا تلاش لی، مگر کرونا کی دوا ابھی تک نا پا سکے۔ محققین دوا کی جستجو میں لگے ہوئے ہیں۔ ان شاءاللہ کرونا کی دوا پا لیں گے۔ پھر کرونا کا علاج آسان ہو جائے گا۔ ہم اللہ تعالیٰ سے دعا کرتے ہیں کہ یا اللہ تحقیق کرنے والوں کو کرونا کی دوا سجھا دے۔

अल्लाह तआला ने जो मरज़ उतारा है उसकी दवा भी उतारी है लेकिन दवा को इन्सानी अ़क़ल पर छोड़ दिया। इन्सान ने मरज़ की दवा खोजना शुरु की आख़िरकार कामयाब हुआ और मरज़ की दवा तलाश ली, मगर कोरोना की दवा अब तक न पा सके। मुह़क़्क़िक़ीन दवा की जुस्तुजु में लगे हुए हैं, इंशाअल्लाह कोरोना की दवा पा लेंगे, फिर कोरोना का इलाज आसान हो जाएगा। हम अल्लाह तआ़ला से दुआ करते हैं कि याअल्लाह तहक़ीक़ करने वालों को कोरोना की दवा सुझा दे।